thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

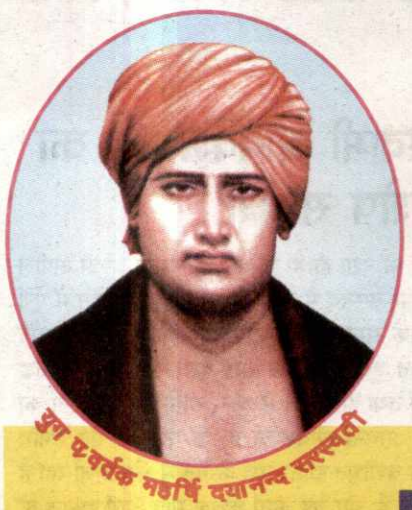

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 10 अंक 50 22 से 28 जनवरी, 2015 दयानन्दाब्द 191 सृष्टि सम्वत् 1960853115 सम्वत् 2071 मा. शु.-02

गणतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर

आर्य समाज की स्थानीय इकाइयों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं, आर्य युवक संगठनों, आर्य शिक्षण संस्थाओं, गुरुकुलों, आश्रमों आदि के पदाधिकारियों एवं सदस्यों के नाम

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष सन्देश

आर्यजन कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, धार्मिक पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं गौ आदि प्राणियों की हत्या के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान चलायें

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान एवं युवा हृदय सम्राट स्वामी आर्यवेश जी ने गणतन्त्र दिवस के अवसर पर आर्यजनों को विशेष सन्देश देते हुए कहा कि आर्य समाज प्रारम्भ से ही नारी जाति के गौरव, सम्मान, सुरक्षा, शिक्षा एवं सशक्तिकरण के लिए सर्वाधिक प्रयत्नशील रहा है। आर्य समाज के संस्थापक तथा नारी जाति उद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी जाति के महत्त्व को दर्शाते हुए कहा है कि **"मातृमान पितृमान आचार्यवान् पुरुषो वेदः"** माँ बच्चे का प्रथम गुरु होती है। **"माता निर्माता भवति"**, मां बच्चे का निर्माण करने वाली होती है अतः मातृ शक्ति को शिक्षित, संस्कारित एवं सशक्त बनाये बिना किसी भी सभ्य समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जब पूरे समाज में महिलाओं को उपेक्षित एवं अपमानित किया जा रहा था उन्हें न पढ़ने का अधिकार था और न ही वेद मंत्र बोलने, सुनने अथवा देखने का अधिकार था और हर दृष्टि से दूसरे दर्जे का नागरिक बनाकर पीछे धकेला जा रहा था ऐसे समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हजारों वर्षों के बाद सर्वप्रथम वेद के मंत्र को उद्धृत करते हुए कहा था **यथेमाम वाचम् कन्याणी मा वदानि जनेभ्यः** संसार में कोई भी स्त्री या पुरुष कल्याण करने वाली वेद की वाणी को सुन सकता है पढ़ सकता है और हर प्रकार से लाभान्वित हो सकता है। आर्य समाज निरन्तर महिलाओं की अस्मिता की रक्षा के लिए कार्य कर रहा है। यह सर्वविदित है कि सन् 2005 में दीपावली के दिन महर्षि दयानन्द के निर्वाण के अवसर पर महर्षि के जन्म स्थान टंकारा से अमृतसर तक की जन-जागरण यात्रा आर्य समाज के नेतृत्व में कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध सफलता पूर्वक निकाली गई थी। इससे पूर्व भी आर्य समाज के द्वारा दिल्ली से देवराला तक सतीप्रथा के विरुद्ध यात्रा का आयोजन किया गया था और समय-समय पर नारी जाति की उन्नति, उन्हें सम्मान दिलाने, उन्हें बराबरी का दर्जा दिलवाने के लिए संघर्ष किया है और निरन्तर कार्य कर रहा है। कन्या भ्रूण हत्या के भयावह परिणामों के बारे में सर्वप्रथम आर्य समाज ने ही सोचा और जन जागरण यात्राएँ तथा आन्दोलन इस कुत्सित समस्या के विरुद्ध किये। इसके बाद सरकारों और धार्मिक संस्थाओं ने इस गम्भीर समस्या को समझा और इसके विरुद्ध प्रयत्नशील हुए और

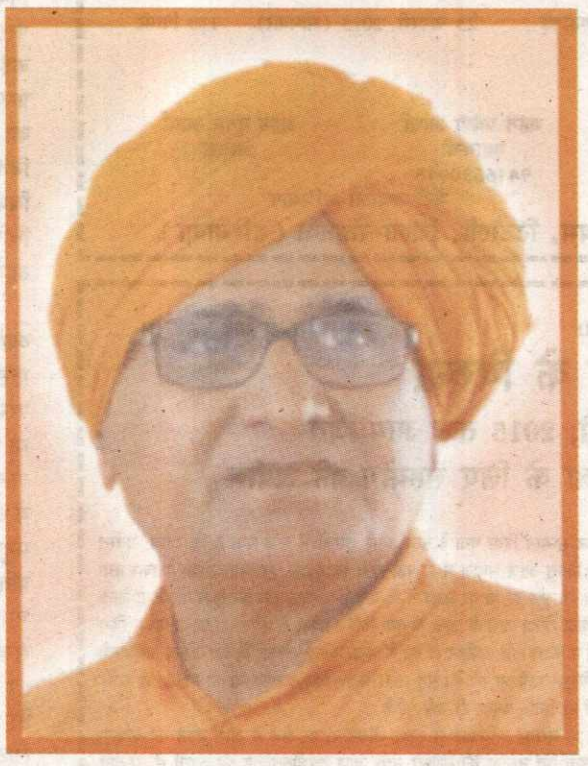

इसे राष्ट्रीय अभियान बनाया। इसी प्रकार बेटी बचाओ अभियान की मुहिम भी सर्वप्रथम आर्य समाज ने प्रारम्भ की। बेटी बचाओ अभियान का मुख्य उद्देश्य ही नारी के अस्तित्व को बचाने का है नारियों को उनके आत्मसम्मान, स्वाभिमान, समानता के हक दिलवाने के लिए आर्य समाज निरन्तर संघर्ष करता रहेगा। यदि कन्या भ्रूण हत्या के द्वारा कन्याओं को इसी प्रकार माँ के पेट में मारा जाता रहा तो एक दिन न सिर्फ नारी अपितु मानव मात्र का अस्तित्व मिटने की नौबत आ सकती है। इसलिए अभी से सावधान होने की आवश्यकता है। देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान की शुरुआत आर्य समाज की बहुत बड़ी जीत है और एक उपलब्धि है। स्वामी जी ने प्रधानमंत्री जी के इस नारे को आगे बढ़ाते हुए बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ और देश को आगे बढ़ाओ का नारा देते हुए गली-मुहल्ले, गांव, शहर के लोगों से अपील की कि सब लोग संगठित होकर इस मिशन को पूर्ण करने में अपनी पूरी ताकत लगायें।

स्वामी जी ने अपने संदेश में दूसरी सबसे बड़ी समस्या नशाखोरी को देश के लिए सर्वाधिक घातक बताया। आज भारत में नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति से देश की बहुत बड़ी हानि हो रही है आज जितनी दुर्घटनायें हो रही हैं या अन्य अनैतिक कार्य हो रहे हैं उन सबके लिये शराब तथा अन्य नशे जिम्मेदार हैं। आज स्थिति इतनी विकराल हो गई है कि नशे के बिना कोई घर नहीं मिलेगा व्यक्ति तो मिल सकता है। नशे का व्यापार निजी हाथों में तो है ही सरकारें भी राजस्व प्राप्त करने के लिए इसमें हर प्रकार का सहयोग कर रही हैं। देश की युवा पीढ़ी और गरीब जनता को नशे ने नर्क में धकेल जा रहा है जिसके परिणाम स्वरूप हर गली मुहल्ले गांव में नशेड़ियों का आतंक देखने को मिल जायेगा। जिस घरमें एक भी व्यक्ति नशे की चपेट में आ जाता है उस घर की आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति दयनीय बन जाती हैं भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने अपने कार्यक्रम 'मन की बात' में नशे की बात कही थी उन्होंने कहा कि नशे से पैदा होने वाला धन आतंकवादियों की गोली से निकलता है अगले पृष्ठ पर जारी है

कन्या भ्रूण हत्या से मानव की ही नहीं बल्कि मानवता की मौत हो रही है - बहन पूनम आर्या

कन्या भ्रूण हत्या से मानव की ही नहीं बल्कि मानवता की, संस्कृति की, सभ्यता की, नैतिकता की, प्राकृतिक न्याय की, देश के कानून की भी हत्या हो रही है। ये शब्द बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय अध्यक्षा बहन पूनम आर्या ने 17 जनवरी, 2015 को शारदा महिला महाविद्यालय, सिंघानी, जिला-भिवानी हरियाणा में कहे उन्होंने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या के कारण लड़कियों की जनसंख्या कम होने के कारण करोड़ों युवाओं का कंवारा मर जाना इतना कष्टदायी बात नहीं है जितनी बड़ी बात उससे पैदा होने वाली सामाजिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक, कानूनी समस्याओं द्वारा समाज के चेहरे का बिगड़ना है। इसलिए आज लोगों को अपने विचार एवं मनोवृत्ति को बदलने की जरूरत है तभी इस समाज की स्थिति सामान्य हो पायेगी।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने कहा कि बेटियाँ बचाने की हमारी मुहिम निरन्तर चलती रहेगी। हालांकि हमें पता है कि हमारी लड़ाई लम्बी चलेगी परन्तु अन्त में जीत भी हमारी ही होगी। बहन जी ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का आभार व्यक्त किया उन्होंने आर्य समाज द्वारा चलाये गये बेटी बचाओ अभियान को अपने एजेण्डे में शामिल किया है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के प्रधान ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य ने कहा कि आर्य समाज 2005 से इस मुद्दे पर कार्य कर रहा है जो कि अब तक निरन्तर चल रहा है। आगामी फरवरी माह में महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस 14 फरवरी से 23 फरवरी तक पूरे प्रदेश के 21 जिलों में बेटी बचाओ जन-चेतना यात्रा निकाली जायेगी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के नेतृत्व में निकाली जाने वाली इस यात्रा का प्रारम्भ पलवल से होगा तथा समापन चण्डीगढ़ में होगा। शारदा महिला महाविद्यालय सिंघानी की निदेशक श्रीमती सुमन शर्मा ने सभी अतिथियों का स्मृति चिन्ह देकर सम्मान किया।

बेटी बचाओ अभियान की राष्ट्रीय संयोजक बहन प्रवेश आर्या ने उपस्थित सैकड़ों छात्राओं को कन्या भ्रूण हत्या जैसे जघन्य पाप को मिटाने का संकल्प भी दिलवाया तथा विद्यालय की दो होनहार छात्राओं को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर मास्टर राम अवतार आर्य, मा. राजेश डांगी, संगीत कुमार, पिताम्बर शर्मा, डॉ. कुलवीर, नरेश कुमार, सुनिता देवी, ममता, दीपा आदि भी उपस्थित रहे।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

बेटी बचाओ! बेटी पढ़ाओ!! देश को आगे बढ़ाओ!!!

महर्षि दयानन्द सरस्वती

कन्या भ्रूणहत्या के विरुद्ध स्वामी आर्यवेश के नेतृत्व में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा आयोजित

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक

पलवल से चण्डीगढ़ की 10 दिवसीय जन-चेतना यात्रा का कार्यक्रम

स्वामी इन्द्रवेश

क्र. सं.	प्रारम्भ	रात्रि पड़ाव	तिथि	दूरी
1	पलवल से वाया (बघोला, पृथला, गदपुरी, बलभगढ़)	फरीदाबाद	14 फरवरी, 2015 (शनिवार)	25 किमी.
2.	फरीदाबाद से वाया (पाली, धौज, सोहना, बादशाहपुर, गुड़गांव जमालपुर, पाटौदी, चिल्हड़, रेवाड़ी)	कनीना	15 फरवरी, 2015 (रविवार)	125 किमी.
3.	कनीना से वाया (महेन्द्रगढ़, माधोगढ़, डालनवास, सुरेहती, सतनाली, फरटिया, लौहारू, सिंघानी, ढिगावा, पोहकरवास, कुड़ल)	जूई	16 फरवरी, 2015 (सोमवार)	95 किमी.
4.	जूई से वाया (गोलागढ़, भिवानी, बीट्स बामला, खरक कलां, कलानौर, काहनौर, मसूदपुर बेरी, धौड़, झज्जर)	रोहतक	17 फरवरी, 2015 (मंगलवार)	125 किमी.
5.	रोहतक से वाया (टिटौली, बहुअकबरपुर, मदीना, खरकड़ा, महम, भैणी महाराजपुर, मुण्ढाल, सौरखी, ढ़ाणा, हांसी, देपल, उमरा, सुल्तानपुर, भगाना, लाडवा,मुकलान)	हिसार	18 फरवरी, 2015 (बुद्धवार)	100 किमी.
6.	हिसार से वाया (आर्यनगर, गुरुकुल धीरणवास, बालसमन्द डोभी, बगला, आदमपुर, भट्टू, चाहरवाल, पीली मन्दौरी, नाथूसरी चौपटा, चाडीवाल	सिरसा	19 फरवरी, 2015 (गुरुवार)	125 किमी.
7.	सिरसा से वाया (मोरीवाला, जोधकां, फतेहाबाद, रतिया धारसूलकलां, टोहाना, बिठमड़ा, नरवाना, डूमखाकलां उचाना, बड़ौदा, खटकड़, जीन्द)	जीन्द	20 फरवरी, 2015 (शुक्रवार)	130 किमी.
8.	जीन्द से वाया (पाण्डूपिण्डारा रधाना, भम्भेवा, नूरनखेड़ा बुटाना, गोहाना, मोहाना, बिघल, बडवासनी, सोनीपत, गन्नौर, समालखा, पट्टीकल्याणा, पानीपत, खरकाली, करनाल	करनाल	21 फरवरी, 2015 (शनिवार)	135 किमी.
9.	करनाल से वाया(निसंग, पूण्डरी, पाई, राजौन्द, कैथल, ढाण्ड, पबनावा, मिर्जापुर, कुरुक्षेत्र, पीपली, लाड़वा, रादौर, यमुनानगर	यमुनानगर	22 फरवरी, 2015 (रविवार)	160 किमी.
10.	यमुनानगर से वाया (अम्बाला, पंचकूला)	चण्डीगढ़	23 फरवरी, 2015 (सोमवार)	110 किमी.

निवेदक

आचार्य सन्तराम, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान, 9354840454 | बहन प्रवेश आर्या, महामन्त्री, 9416630916 | बहन पूनम आर्या, अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा — बेटी बचाओ अभियान

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

।। ओ३म्।।

बेटी बचाओ! बेटी पढ़ाओ!! देश को आगे बढ़ाओ!!!

कन्या भ्रूण हत्या के विरुद्ध

14 फरवरी, 2015 से 23 फरवरी, 2015 तक आयोजित पलवल से चण्डीगढ़ की जन-चेतना यात्रा के लिए सहयोग की अपील

मान्यवर,

आपको भलीभांति मालूम है कि भारत की धर्म परायण संस्कृति में नारी को सर्वदा उच्च सम्मान दिया गया है तथा हमारे शास्त्रों में कहा गया है कि "यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता" अर्थात् जहां नारी का सम्मान होता है वहां देवता वास करते हैं। किन्तु आज समाज में हो रही नारी की दुर्दशा एवं अनादर को देखकर क्या हम यह कह सकते हैं कि यह एक सभ्य एवं सुसंस्कृत समाज है। जिस समाज में जानबूझ कर कन्या भ्रूण को माँ की कोख में ही बेरहमी से काट-छांट कर खत्म कर दिया जाता हो या कन्याओं को पैदा होते ही मार दिया जाता हो, जिस समाज में दहेज के नाम पर लाखों लड़कियां जिन्दा जला दी जाती हों तथा विविध प्रकार से महिलाओं पर अत्याचार किए जाते हों, क्या उस समाज को हम सभ्य समाज कह सकते हैं। दुर्भाग्य की बात है कि आज भारत में न केवल नारी उत्पीड़न हो रहा है बल्कि नोबेल पुरस्कार विजेता प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रो. अमृत्यसेन के अनुसार कन्या भ्रूण हत्या एवं कन्या शिशु हत्या के बढ़ने से भारत में लड़कियां विलुप्त होती जा रही हैं। सन् 1991 में इन विलुप्त लड़कियों की संख्या ढाई करोड़ के लगभग थी। सन् 2001 में यह आंकड़ा साढ़े तीन करोड़ को पारकर गया था और वर्तमान में भी स्थिति बदतर ही बनी हुई है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने नारी सम्मान के लिए उनके पढ़ने के बराबर अधिकार से लेकर जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ने की घोषणा करके नर-नारी समता का जो उद्घोष किया था आज उसकी धज्जियां उड़ रही हैं। अश्लीलता एवं नग्नता की शिकार नारी आज उपभोक्तावाद की आंधी में सरेआम अपनी अस्मिता बेच रही है। प्रतिदिन बलात्कार एवं छेड़छाड़ की घटनाओं के समाचारों से अखबार भरे पड़े रहते हैं। नारी जाति के प्रति इस सड़ी-गली सोच एवं मानसिकता को आर्य समाज चुपचाप नहीं देख सकता। यद्यपि समस्यायें और भी अनेक हैं किन्तु आर्य समाज ने तथा इसकी शिरोमणि सभा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने यह महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है कि नारी सम्मान की सुरक्षा के लिए कन्या भ्रूण हत्या, कन्या शिशु हत्या व नारी पर होने वाले विविध अत्याचारों के विरुद्ध राष्ट्रव्यापी अभियान चलाया जाये तथा समाज में चेतना पैदा करने के साथ-साथ सरकार को भी इस दिशा में चेतना पैदा करने के साथ-साथ सरकार को भी इस दिशा में सख्त कदम उठाने के लिए प्रभावित किया जाये। यह प्रसन्नता की बात है कि देश के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ अभियान प्रारम्भ कर दिया है। आशा की जाती है कि सभी प्रान्तीय सरकारें भी इस दिशा में और अधिक संवेदनशील होकर कार्य करेंगी। आर्य समाज के युवा संगठन सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् द्वारा कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी एवं धार्मिक अन्धविश्वास के विरुद्ध आगामी 14 फरवरी, 2015 (महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्म दिवस) को हरियाणा के पलवल शहर से एक प्रभावशाली जन-चेतना यात्रा प्रारम्भ की जायेगी जो हरियाणा के सभी जिलों से होती हुई 23 फरवरी, 2015 को चण्डीगढ़ में सम्पन्न होगी। इस यात्रा में विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं स्वयं सेवी संगठनों का भी भरपूर समर्थन एवं सहयोग लिया जायेगा तथा प्रमुख धर्माचार्य, आर्य संन्यासी, आर्यनेता, राजनैतिक नेता, जन प्रतिनिधि विभिन्न स्थानों पर पधार कर जनता का मार्गदर्शन कर आह्वान करेंगे।

आर्य समाज प्रारम्भ से ही समाज के ज्वलन्त मुद्दों पर अपना तेजस्वी रूख अपनाकर कार्य करता रहा है। कन्या भ्रूण हत्या एवं नशाखोरी के विरुद्ध भी देश में सर्वप्रथम आर्य समाज ने ही मोर्चा खोला था तथा महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान टंकारा (गुजरात) से जलियांवाला बाग अमृतसर तक की पन्द्रह दिवसीय सर्वधर्म जन-चेतना यात्रा निकालकर देश की जनता को जगाया था। आर्य समाज की पहल पर शुरू किया गया यह बेटी बचाओ अभियान आज सभी संगठनों, राजनैतिक पार्टियों व सरकारों के घोषणा पत्र में शामिल हो चुका है। अतः प्रत्येक आर्य सामाजिक कार्यकर्ता का दायित्व बनता है कि उसे इस ऐतिहासिक यात्रा को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिए। जहां-जहां से यात्रा गुजरे वहां-वहां जन सभाओं व रैलियों में भारी संख्या में सम्मिलित होने के लिए लोगों को प्रेरित करें, अपने बैनर लेकर प्रत्येक आर्य समाज व आर्य शिक्षण संस्था कार्यक्रम में अवश्य भाग लें तथा संकल्प पत्र पर अधिक से अधिक लोगों के हस्ताक्षर कराकर देवें। हम उन जागरूक, यशस्वी एवं समाज के प्रति सकारात्मक सोच रखने वाले सभी सामाजिक संगठनों एवं शिक्षण संस्थाओं (स्थूल व कॉलेजों) के कर्णधारों से भी प्रार्थना करते हैं कि यात्रा को अधिक से अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए अपनी संस्थाओं को स्थानीय कार्यक्रमों में अवश्य शामिल करें।

यात्रा को सफल एवं प्रभावी बनाने के लिए जो महानुभाव 10 दिन का समय देकर यात्रा में शामिल होना चाहते हैं उनका स्वागत है। वे अपना नाम अविलम्ब यात्रियों की सूची में अंकित करवा लेवें। हमारी अपने समस्त दान-दाताओं एवं विशिष्ट सहयोगियों से सानुरोध अपील है कि वे अपना अधिक से अधिक आर्थिक सहयोग देकर तथा अपनी ओर से 10 दिन के लिए निःशुल्क वाहन (जीप, फोर व्हीलर आदि) ड्राईवर सहित उपलब्ध कराकर हमारा सहयोग करें। आप सभी के सहयोग से ही यह पवित्र अभियान सफल हो सकेगा। आशा है आप सभी का सहयोग अवश्य मिलेगा। आप अपना सहयोग "युवा निर्माण अभियान" के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट, मनीआर्डर निम्न पते पर प्रान्तीय कार्यालय में भेज सकते हैं।

निवेदक

आचार्य सन्तराम, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष | ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रधान, 9354840454 | बहन प्रवेश आर्या, महामन्त्री, 9416630916 | बहन पूनम आर्या, अध्यक्ष

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्, हरियाणा — बेटी बचाओ अभियान

प्रान्तीय कार्यालय : स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ आश्रम, टिटौली, जिला-रोहतक (हरियाणा)

पृष्ठ–1 का शेष

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का विशेष सन्देश

अर्थात् आतंकवाद का जनक भी नशा ही है। उन्होंने प्रधानमंत्री जी से अपील की कि वे यदि नशे के मुद्दे पर वास्तव में संवेदनशील हैं तो सारे देश में पूर्ण शराबबन्दी लागू करें और इसके सम्बन्ध में राष्ट्रीय नीति घोषित करें। उन्होंने समस्त आर्यों से अपील करते हुए कहा कि सारे देश में नशे के विरुद्ध जन-जागरण कार्यक्रम चलायें तथा इस कार्य में अन्य सामाजिक संगठनों का भी सहयोग लें। यह इसलिए अत्यन्त आवश्यक है कि देश की रीढ़ हमारा युवा वर्ग पाश्चात्य संस्कृति के वशीभूत होकर नशे के गर्त में धंसता जा रहा है जिसे बचाना अत्यन्त आवश्यक है और यह कार्य केवल मात्र आर्य समाज के वीर सैनिक ही कर सकते हैं।

धर्म के नाम पर फैलते जा रहे पाखण्ड की चर्चा करते हुए स्वामी जी ने कहा कि धर्म के नाम पर चलाये जा रहे पाखण्ड इस समय चरम पर है और इसको बढ़ाने में मीडिया की भी पूरी ताकत लग रही है, प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया अपने आर्थिक स्वार्थों के चलते इसको फूलने-फलने में असाधारण मदद कर रहे हैं जो अत्यन्त चिन्ता की बात है। उन्होंने इसे वर्तमान समय की सबसे बड़ी चुनौती बताते हुए कहा कि आज बड़े-बड़े कथित धर्मगुरु लोगों की धार्मिक भावनाओं का दोहन करने में लगे हैं और उन्हें अज्ञान एवं अन्धेरे मे धकेल रहे हैं। धर्मभीरू जनता ऐसे प्रपंचियों के जाल में फंस कर विभिन्न अनाचार, अत्याचार तथा पापाचार का शिकार हो रही है और अपने पसीने की कमाई को इन कथित गुरुओं पर लुटा रही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आजीवन ऐसे पाखण्डियों और अधार्मिक व्यक्तियों के विरुद्ध संघर्ष किया और उनकी पोल खोली तथा धर्म के नाम पर पाखण्ड फैलाने वालों के विरुद्ध जमकर लड़ाई लड़ी। लेकिन आज हमारी उदासीनता के कारण धर्म का व्यापार तथा पाखण्ड तीव्र गति से पनप रहा है। जिसे रोकने की नितान्त आवश्यकता है। आप सब महर्षि के वेद सम्मत विचारों को जन-जन तक पहुंचाने का कार्य करें क्योंकि जब तक लोग बुद्धि, विवेक और सृष्टि के नियम के पैमाने पर धर्म और धर्म के नाम पर चल रहे सारे धन्धों को नहीं परखेंगे तब तक इनके जाल से मुक्त नहीं हो सकते। एक वर्ष के अन्तराल में कई पाखण्डियों की ढोल की पोल खुली है और लोगों में जागरूकता का प्रस्फुटन हुआ है और यही समय है जब थोड़े से प्रयासों से धर्म भीरू जनता को यह समझाया जा सकता है कि पाखण्ड अन्धविश्वास को समाप्त किये बिना समाज आगे नहीं बढ़ सकता। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को इस विषय पर स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक शक्ति लगानी चाहिए। विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा वैदिक सिद्धान्तों को प्रस्तुत करें और जन-जन तक आर्य समाज के मन्तव्यों को पहुंचाने का कार्य करें।

गो आदि पशुओं की हत्या, अन्य जीवों की निर्मम हत्या, मांस का व्यापार और मांसाहार आज देश में तीव्र गति से बढ़ रहा है। देवभूमि भारत को मांस उत्पादन की विशाल मण्डी बना दिया गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि परमपिता परमात्मा ने जिस मनुष्य को शाकाहारी प्रणी के रूप में पैदा किया था वह जानवरों से भी हिंसक स्वभाव का बनता जा रहा है। हिंसक व्यक्ति के अन्दर करुणा, दया, संवेदना का अभाव होता है और यही कारण है कि देश में अपराधों, हत्याओं तथा अनैतिक कार्यों का ग्राफ निरन्तर बढ़ता जा रहा है। मनुष्य का स्वभाव क्रूर होता जा रहा है। एक रिपोर्ट के अनुसार पूरी दुनिया में प्रतिदिन 100 करोड़ पशुओं की हत्या मांसाहार के लिए कर दी जाती है। भारत में लार्ड क्लाइव के समय पहला बूचड़खाना स्थापित हुआ था जिनकी संख्या 1947 तक 300 तक ही बढ़ पाई थी। लेकिन आजाद भारत में केवल 67 वर्षों में ही वैध बूचड़खानों की संख्या तीन हजार से भी अधिक पहुँच गई है। और इसमें यदि अवैध बूचड़खाने भी जोड़ दिये जायें तो यह संख्या तीन लाख तक पहुंचेगी। एक अनुमान के अनुसार लगभग पचास हजार गोवंश प्रतिदिन इन वैध बूचड़खानों में कटता है। यह समूचा अशोभनीय परिदृष्य भारत की आध्यात्मिक विरासत के विल्कुल विपरीत है जिसमें शाकाहार, अहिंसा करूणा दया जैसे जीवन मूल्यों को महत्त्व प्राप्त रहा है। इस देश में संविधान को क्या कहा जाये जहां हिरण, खरगोश, मोर आदि को मारने पर तो अदलातें दण्ड देती हैं लेकिन जिसे देशवासी गोमाता कह कर पुकारते हैं उस प्राणी के हत्यारे को दण्डित नहीं कर पाती। आंकड़े बताते हैं कि मांस उत्पादक पशुओं को जितना अन्न खिलाकर मांस तैयार किया जाता है उस मांस से केवल 2.6 अरब लोगों को मांसाहार मिलेगा जबकि इतने ही अनाज से 6 अरब शाकाहारियों की भूख मिटाई जा सकती है। अतः आर्यों को इस मुद्दे पर भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए तथा गो तथा अन्य प्राणियों की हत्या के विरुद्ध आन्दोलनात्मक रूख अपनाना चाहिए। मैं प्रधानमंत्री जी से अपील करता हूँ कि गाय को राष्ट्रीय और अवध्य पशु घोषित किया जाये। देश में गोहत्या बन्द की जाये तथा मांस के निर्यात तथा बूचड़खानों पर अविलम्ब प्रतिबन्ध लगाया जाये। स्वामी जी ने कहा कि श्री नरेन्द्र मोदी जी ने चुनाव से पूर्व अपनी चुनाव सभाओं में गो-हत्या, मांस निर्यात रोकने तथा बूचड़खानों को समाप्त करने की जो घोषणायें की थी उनको वे समय रहते पूरा करें नहीं तो इसके विरुद्ध राष्ट्रव्यापी आन्दोलन आर्य समाज के द्वारा चलाया जायेगा। उन्होंने आर्यों से अपील की कि वे पत्र लिखकर गोष्ठियाँ करके तथा अन्य माध्यमों से सरकार पर दबाव बनायें तथा गो-हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाने में अपना योगदान प्रदान करें।

अपने संदेश में स्वामी जी ने आर्यों का आह्वान किया कि उपर्लिखित मुद्दों पर स्थानीय इकाइयों से लेकर ऊपर तक पूरी शक्ति के साथ संगठन बनाकर जन-जागरण का राष्ट्रीय स्तर पर आयोजन करें तथा आर्य समाज के पुरातन तेजस्वी स्वरूप को उभारने में सहयोगी बनें।

thearyasamaj.org

सामाजिक क्रांति के शाश्वत सूत्र

– डॉ. सुरेन्द्र सिंह कादियाण

...गतांक से आगे

शैक्षणिक शोषण

शैक्षणिक विषमता से तात्पर्य उस विषमता से है जो शिक्षा में समानता के अधिकार का हनन करती है। शैक्षणिक क्षेत्र में असमानता उत्पन्न करने के अनेक कारक मौजूद हैं जिनमें प्रमुख कारक हैं – सर्वमान्य राष्ट्रीय पाठ्यक्रम का अभाव, जनसंख्या के अनुकूल पर्याप्त विद्यापीठों का न होना, अध्यापकों का अभाव, सरकारी स्कूलों की तुलना में पब्लिक स्कूलों की लोकप्रियता बढ़ना, राष्ट्रीय व क्षेत्रीय भाषाओं से इतर भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाना, शुल्क अर्थात् फीस में एकरूपता न होना, ट्यूशन का धंधा समानान्तर रूप से चलना, गैस्ट टीचरों की अथवा अल्प वेतन पर अध्यापकों की नियुक्ति, शैक्षणिक सुविधाओं का अभाव, अध्यापकों की विद्यापीठ से अवैध अनुपस्थिति, अयोग्य एवं अनुभवहीन अध्यापकों की नियुक्ति, विद्यार्थी व अध्यापकों के बीच परम्परागत गुरु-शिष्य सम्बन्ध न रहना, विद्यापीठों में भी जातिगत अभिजात्यता एवं अस्पृश्यता के रोग का फैलना, अध्यापकों व विद्यार्थियों में नशाखोरी बढ़ना, विद्यापीठों में अनुशासनहीनता बढ़ना जिससे गुटबाजी, झगड़े, तोड़फोड़ व यौन शोषण तक की घटनाएं घटती हैं, सह-शिक्षा को बढ़ावा मिलना, छात्रावासों में अनियमितताओं का बढ़ना, क्षेत्रीयता के कारण अलगाव व तनाव बढ़ना, छात्रों की, स्टाफ की यूनियन बनना जो आये दिन झमेला, बखेड़ा बनाये रख वातावरण को खराब बनाये रखती है, नकल करने या पर्चे आऊट करने की मानसिकता का निरन्तर बढ़ते जाना, फीस के साथ-साथ अतिरिक्त मदों के लिए वसूली करना, सुविधाजनक पहुँच से विद्यापीठों का दूर होना, प्राईवेट क्षेत्र का उच्च शिक्षा जगत् में बढ़ता प्रसार, दबाव व प्रभाव जिससे शिक्षा प्राप्त करना मध्यजीवी परिवार के बच्चों के लिए असम्भव होता जा रहा है। शैक्षणिक जगत् में जब तक ये कारक विद्यमान रहेंगे तब तक वहाँ सिवाय विषमता, असमानता, भेदभाव के कुछ नज़र नहीं आयेगा। अत: इस स्थिति में संविधान प्रदत्त शिक्षा के अधिकार का कोई औचित्य नहीं रह जाता। शैक्षणिक जगत् में एक छोर पर बदहाली है तो दूसरे छोर पर व्यावसायिकता है। स्कूल चाहे सरकारी हों अथवा गैर सरकारी उनमें शिक्षा का स्तर इतना गिर चुका है कि बिना ट्यूशन लगाये छात्र एक क्लास से दूसरी क्लास में नहीं जा सकता। बेरोजगारी और मंहगाई के इस युग में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली एक तिहाई आबादी के बच्चे तो पढ़ ही नहीं सकते, मध्यजीवी परिवारों के बच्चों को भी शिक्षा दिलाना टेड़ी खीर हो गया है। आर्थिक रूप से सम्पन्न परिवारों के बच्चों तक ही आधुनिक शिक्षा सिमटती जा रही है। सीनियर सैंकेड्री के छात्र की एक विषय की ट्यूशन फीस जहां एक हजार से लेकर तीन हजार तक वसूली जाती हो क्या वहां मध्यजीवी परिवार के दो बच्चे इस भार का वहन कर सकते हैं? शैक्षणिक जगत् का प्राईवेटाइजेशन करने की तैयारियाँ जोरों पर हैं क्योंकि सरकारी खज़ाना शिक्षा बजट का बोझ उठाने की स्वीकृति नहीं देता। इस स्थिति में शैक्षणिक जगत् में सिवाय अराजकता के ताण्डव के कोई दूसरी चीज दिखाई नहीं देगी। अपने घर या शहर से बाहर जाकर पढ़ाई करना तो एक जोखिम भरा काम हो गया है। क्योंकि कॉलेज फीस के अलावा आवास और भोजन पर उसका एक माह का अतिरिक्त खर्च चार-पांच हजार तक हो जाता है। यह सही है कि सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की उपस्थिति बनाये रखने के लिए मिड-डे-मील की व्यवस्था की गई है, स्कूल की यूनीफॉर्म ड्रेस नि:शुल्क दी जाती है, पुस्तकों का सैट फ्री दिया जाता है, सीनियर सैकेंड्री तक फीस भी नहीं ली जाती। कुछ प्रान्तों में बी. ए. तक कन्याओं को नि:शुल्क शिक्षा देने अथवा उन्हें साईकिल व लैपटॉप देने का प्रावधान है। लेकिन सरकारी स्कूलों का जो स्तर है उसे देखकर कितने परिवार और कौन परिवार अपने बच्चों को इन स्कूलों में भेजते हैं? अब तो गांवों में भी पब्लिक स्कूलों ने पांव पसारने शुरू कर दिये हैं जो सरकारी स्कूलों को कड़ी टक्कर दे रहे हैं, उन्हें दोयम दर्जे की विद्यापीठ बना रहे हैं जहां केवल दलित या निर्धन परिवार के बच्चे ही दिखते हैं। विद्यापीठ कभी सरस्वती के मन्दिर हुआ करते होंगे लेकिन अब तो वहां सरस्वती के स्थान पर कुबेर विराजमान हैं जो उद्योगपतियों का, व्यवसाय व धंधा करने वालों का, मोटी व अंधी कमाई करने वालों का, लूट-मार करने वाले लुटेरों का देवता है। शैक्षणिक क्षेत्र में अब विदेशी निवेशक भी घुसपैठ करने लगे हैं, यहां भी एफ. डी. आई. का प्रकोप झलकने लगा है अत: समस्याएँ बजाय घटने के बढ़ने की अधिक सम्भावना है क्योंकि व्यवसाय और उद्योग घाटे को नहीं मुनाफे को आगे रखकर शुरू होते हैं।

भारतीय शिक्षा जगत् की स्थिति कितनी दयनीय है इसका आकलन इन तथ्यों से हो सकता है कि देश भर में 5 लाख अध्यापकों के पद खाली पड़े हैं। सर्वशिक्षा अभियान में 35 प्रतिशत स्टाफ कम है। औसतन प्रतिदिन 25 प्रतिशत अध्यापक छुट्टी पर रहते हैं। विद्यार्थियों व अध्यापकों का अनुपात 35 प्रतिशत का है और भारत सरकार जी. डी. पी. का मात्र 4 प्रतिशत शिक्षा पर खर्च करती है। साल भर में केवल आठ महीने स्कूल खुलते हैं।

संविधान यदि शिक्षा के अधिकार की वकालत करता है, संस्तुति करता है, अभिशंसा करता है तो उसे उन कारकों के उन्मूलन की भी समुचित व्यवस्था करनी होगी जो शैक्षणिक क्षेत्र में विषमता, असमानता, अराजकता फैला रहे हैं। देश को एक ऐसी शैक्षणिक आचार संहिता की आवश्यकता है जिसमें यह सुनिश्चित किया जाये कि निर्धन से निर्धन बच्चे को भी उच्च से उच्च शिक्षा निर्बाध रूप से मिल सके। ट्यूशन को अवैध, गैर-कानूनी व दण्डनीय अपराध माना जाये। जिन विद्यापीठों का स्तर निर्धारित मानदण्डों के अनुरूप न हो उनका रजिस्ट्रेशन रद्द हो अथवा सरकार उनका अधिग्रहण कर ले। स्कूलों में ठेकेदारी प्रथा प्रतिबंधित हो अर्थात् गैस्ट टीचर, अल्पवेतन वाले टीचर, अस्थायी टीचर न रखे जायें। कॉलेजों, इंजीनियरिंग व कृषि कॉलेजों, मेडीकल कॉलेजों में कोई पीरियड खाली न रहे इसकी व्यवस्था की जाये। अनुशासनहीनता प्रतिबंधित हो जिसका एक बड़ा कारण छात्र स्टॉफ यूनियनें होती हैं। देश के सभी स्कूलों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों का डिजिटाइजेशन हो जहाँ तुरन्त शिकायत दर्ज की जा सके। विद्यापीठों के प्राईवेटाइजेशन पर प्रभावी रोक लगे और सरकार स्वयं इस भार को वहन करे। विद्यापीठ सरस्वती के पवित्र मंदिर बने रहें, धन-कुवेरों की लूट के अड्डे नहीं यह भी सुनिश्चित होना चाहिए। विद्यापीठ केवल अक्षर ज्ञान के केन्द्र न बने रहें बल्कि चरित्र निर्माण के गुरुकुल भी बनें, ऐसी व्यवस्था हो। शिक्षा को रोजगारोन्मुख बनाना भी अत्यावश्यक है क्योंकि बेरोजगारी निरन्तर बढ़ रही है, सरकारी नौकरियाँ सीमित हैं, और विदेश में प्रतिभा पलायन अधिक होने लगा है। शिक्षा-सुधार को लेकर जो कमीशन समय-समय पर बने हैं उनकी सिफारिशें ठण्डे बस्ते के सुपुर्द कर दी गई हैं अत: उनका आलोड़न कर उत्तम सिफारशें लागू की जायें। विद्यापीठों का सम्प्रदायीकरण, जातीयकरण और सांस्कृतिकरण भी हो रहा है, इस प्रवृत्ति पर भी ठोस नियन्त्रण लगाना जरूरी है। अच्छी शिक्षा सस्ती शिक्षा यही हमारा शैक्षणिक आदर्श व राष्ट्रीय समाघोष होना चाहिए।

आर्थिक शोषण

साम्प्रदायिकता/जातिवाद /पाखण्ड/शोषण/नारी विष-वृक्ष पल्लवित, उसे उखाड़ फेंकना ही अपने इस राष्ट्रधर्म का /भ्रष्टाचार/नशाखोरी उत्पीड़न से जो पुष्पित फलित हो रहा है राष्ट्रधर्म है। क्या आप पालन कर रहे हैं?

आर्थिक विषमता से अभिप्राय उस शोषण से है जो आर्थिक जगत् में हो रहा है। कृषि-जगत्, सार्वजनिक प्रतिष्ठान, उद्योग तथा व्यवसाय जगत् इस क्षेत्र से जुड़े हुए हैं जहां नियोक्ता और कर्मचारी, मालिक और नौकर, प्रतिष्ठान और श्रमिक सीधे-सीधे एक दूसरे से जुड़े हैं। श्रम का उचित मूल्यांकन न होना और उसका उचित दाम न मिलना आर्थिक शोषण का आधार है। यदि हम कृषि जगत् की विषमता का अध्ययन करें तो स्पष्टत: अराजकता दिखाई देती है क्योंकि किसान को उसकी फसल का लाभकारी मूल्य तो क्या लागत मूल्य भी नहीं मिल रहा है। बीज, पानी, बिजली, डीजल, रासायनिक उर्वरक, कीटनाशक, संसाधनों (ट्रैक्टर, बोगी, नलकूप, उपकरण) का अनुरक्षण, भण्डारण, मजदूरी, लदाई, सूखा-ओला वृष्टि वर्षा का प्रकोप इन सबको खरीदने, अपनाने, चुकाने, झेलने पर जो आर्थिक व्यय किसान का होता है उसंका आकलन यदि किया जाये तो बदले में उसे बाजार से जो मिलता है वह मूंह पर तमाचा खाने जैसा अनुभव दे जाता है। लाखों किसानों का आत्महत्या करना इस सच्चाई से तो परदा उठाता है कि वे ऋण का भुगतान करने में असमर्थ थे लेकिन परदे के पीछे की यह सच्चाई कभी सामने नहीं आती कि इस असमर्थता का मूल कारण उसके श्रम का उचित मूल्य न मिलना है। फैक्ट्री में बनने वाले हर उत्पाद का मूल्य फैक्ट्री मालिक तय करता है जिसमें वह कच्चे माल तथा मजदूरी के साथ अपनी मशीनों का अनुरक्षण व ह्रास मूल्य जोड़ने के साथ-साथ फैक्ट्री की जमीन व गोदाम का किराया तथा लदान का भाड़ा तक सभी जोड़ता है लेकिन बेचारा किसान न तो अपनी फसल का मूल्य खुद तय कर पाता है, न अपने खेत व गोदाम का किराया ले पाता है, न लदान का भाड़ा ले पाता है, न अपने श्रम का मूल्य ले पाता है, और न ही उस नुकसान की भरपाई ले पाता है जो प्रकृतिजन्य होता है। सरकार जो भाव तय कर देती है उसी पर किसान को सब्र करना पड़ता है। फसलों के भाव तय करते समय सरकार में बैठे लोग चुनावी गणित का आश्रय लेते हैं, बजटीय घाटे का आश्रय लेते हैं, मनरेगा और गरीबों को सस्ता अनाज उपलब्ध कराने की योजना का आश्रय लेते हैं, शराब की डिस्टिलरियों को सस्ता अन्न कैसे मिले इस नीति का आश्रय लेते हैं, आयात-निर्यात की नीति का आश्रय लेते हैं न कि किसान के खेत में खड़े होकर भाव तय करते हैं। अन्नदाता कहलाने वाला किसान भुखमरी का शिकार होकर, लाचारी और बेवसी का शिकार होकर, सरकार और बाजार की यन्त्रणा का शिकार होकर आज आत्महत्या करने को मजबूर है। छोटे-छोटे मामलों पर संज्ञान लेकर हाईकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट अहम फैसले लेती दिखती हैं लेकिन किसानों की आत्महत्याओं पर वह कब संज्ञान लेंगी और कब न्याय दिलायेंगी? खुले बाजार में बिकने वाले टमाटर का भाव यदि सौ रुपये किलो तक पहुँच जाता है तो किसान को एक किलो के चार रुपये भी नहीं मिलते इस सत्य व तथ्य से देश की अदालतें अनभिज्ञ कैसे रह जाती है? इस विषय को लेकर न अखबारों में चर्चा होती है, न टी. वी. चैनलों पर बहस होती है और न ही सरकार संवेदनशील होती है। वर्षों से भारतीय किसान यूनियन जिन मसलों को उठा रही है जानबूझ कर हर स्तर पर उनकी अनदेखी हो रही है। सरकार की अपनी आर्थिक नीतियाँ और योजनाएं, अपनी कमजोरियां और विफलताएं तथा अपनी मानसिकता और सोच ही इसका मूल कारण है। किसान को यदि उसकी लागत का ही मूल्य मिल जाये तो केन्द्र सरकार को अपने कर्मचारियों का वेतन दो से ढाई गुना तक बढ़ाना पड़ सकता है। अन्य क्षेत्रों में भी इसका प्रभाव पड़ेगा विशेषत: उद्योग जगत् में। मंहगाई आसमान छूने लगेगी, चहुँ ओर हाहाकार मचने लगेगा। इसका सामुख्य करने में सरकार असमर्थ है इसलिए किसान को जानबूझकर दबाया जा रहा है, रौंदा जा रहा है, कुचला जा रहा है, बर्वाद किया जा रहा है। यह घिनौना खेलआज से नहीं सदियों से किसान के साथ खेला जा रहा है। किसान के हित में आज तक यदि किसी ने ईमानदारी और दृढ़ता से आवाज उठाई है तो केवल तीन चार नाम ही सामने आते हैं – हरियाणा से चौ. छोटूराम, उत्तर प्रदेश से चौ. चरण सिंह, बिहार से स्वामी सहजानन्द और गुजरात से सरदार पटेल। समय-समय पर मरणासन्न किसान को इन्हीं की बदौलत आक्सीजन अथवा संजीवनी मिलती रही है और उसने अपना संघर्ष जारी रखा हुआ है। यह कैसा क्रूर मजाक है कि सरकार और प्रशासन किसानों की खुली लूट करने वाले मण्डियों में बैठे बिचौलियों, दलालों, आढ़तियों को संरक्षण दे रही है, शराब उत्पादकों को संरक्षण दे रही है, गन्ना मिल मालिकों को संरक्षण दे रही है, गुड़ व्यापारियों को संरक्षण दे रही है, कपड़ा व जूट मिल मालिकों को संरक्षण दे रही है लेकिन किसानों का गला घोंट रही है। आखिर वह क्यों नहीं देखती और महसूस करती कि किसान से पांच रुपये में एक किलो आलू खरीदने वाली कम्पनी डेढ़ सौ रुपये किलो आलू के चिप्स कैसे बेच रही है? आलू चिप्स और टोमैटू सूप के लघु उद्योग ग्रामीण क्षेत्र में लगा कर क्या किसानों को राहत नहीं पहुंचायी जा सकती? ट्रैक्टर मार्किट को सफल बनाने के चक्र में सरकार ने देश का पशुधन बूचड़खानों में काटने की खुली छूट दे रखी है। इसके कई दुष्परिणाम सामने आये जैसे खेती का लागत मूल्य ट्रैक्टर डीजल अनुरक्षण के कारण बढ़ा, रासायनिक उर्वरकों पर खेती की आत्मनिर्भरता बढ़ी। देसी खाद की अनुपलब्धता के कारण जिससे जमीन कमजोर व जहरीली बनी तथा पशुओं की कमी से दुग्ध उत्पादन कम व मंहगा होने लगा, मिलावट को प्रोत्साहन मिला। पशु-पालन किसान का खेती आधारित सहायक व्यवसाय था लेकिन पशुओं की अंधाधुंध कटाई से इस व्यवसाय पर भी विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। कारण, भैंस की कीमत 60 हजार से लेकर एक लाख रुपये तक जा पहुंची है जो सामान्य किसान की पहुंच से बाहर है। देश में हरित क्रांति लाने का ठोस विकल्प जैविक खेती के रूप में उपलब्ध है लेकिन उसे इस कारण प्रोत्साहित नहीं किया जा रहा है कि उससे रासायनिक उर्वरक उद्योग पिट जायेगा जो भारी मुनाफे में चल रहा है, किसानों को लूट रहा है, नेताओं की जेब भर रहा है क्योंकि इस उद्योग को करोड़ों रुपये की सब्सिडी जो सरकारी खजाने से मिल रही है। मरणासन्न किसान के लिए, आत्महत्या कर रहे किसान के लिए, प्रकृति की मार झेल रहे किसान के लिए सरकारी खजाने में कोई सब्सिडी नहीं है लेकिन जिनके पेट में जगह नहीं उनके मूंह में निवाला ठूंस-ठूंस कर भरा जा रहा है शोषण की यह रफ्तार आखिर कब कम होगी?

आबादी बढ़ने से एक आम किसान के खेत भी बंट रहे हैं, जोत सीमित हो रही है, लागत मूल्य बढ़ रहा है। बेरोजगारी बढ़ रही है क्योंकि सरकारी व गैर सरकारी प्रतिष्ठानों में भर्ती न के बराबर है। देहात में खेती आधारित सहायक उद्योगों की सम्भावनाएं बजाय बढ़ने के घट रही हैं। खुले बाजार में प्रतिस्पर्धा इतनी है कि नया आदमी सहज से टिक नहीं पाता। देहात का बेरोजगार युवक इस स्थिति में पथभ्रष्ट होकर अपराध की दुनिया में प्रवेश कर सकता है। पंजाब में आतंकवाद के दौर में युवकों को अपराध की दुनिया में प्रवेश करते देखा जा चुका है। हरियाणा, उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल का युवक अपहरण, हत्या, लूट, डकैती के क्षेत्र में क्यों आगे है? लालबहादुर शास्त्री जी ने जय किसान जय जवान का नारा दिया था जो आज धुंधला पड़ता जा रहा है। आत्महत्या करने वाले किसान की तो राम नाम सत्य बुलेगी क्योंकि उसकी जय के तो तमाम रास्ते जानबूझ कर बन्द किये जा रहे हैं, उसके बच्चे क्या देश हित में कंधे पर राइफल उठा सकेंगे, जय जवान कहला सकेंगे? यह एक चिन्ताजनक समस्या है जिस पर राष्ट्र के कर्णधारों को गहराई से विचार करना होगा, ठोस समाधान निकालना होगा अन्यथा बात हाथ से निकल कर दूर तक जायेगी।

शेष अगले अंक में

इण्डिया कब बनेगा भारत?

– राजीव चतुर्वेदी

"इण्डिया दैट इज भारत....." (इण्डिया जो कि भारत है...) इस प्रकार भारत के संविधान का पहला अनुच्छेद प्रारम्भ होता है। क्यों भारत इण्डिया का रूपान्तरण है? यह कैसे हो गया? अगर भाषा शास्त्र या व्याकरण को आधार माना जाए तो अंग्रेजी के अनुसार प्रॉपरनाउन का अनुवाद नहीं किया जा सकता। यही हिन्दी का व्याकरण कहता है कि व्यक्तिवाचक संज्ञा का अनुवाद नहीं किया जा सकता। फिर कैसे भारत इण्डिया बना? अब हमें कोई और नहीं, भारत का संविधान ही समझा रहा है कि इण्डिया भारत है, जैसे इस देश के लोग इण्डिया पहले से जानते हों और उन्हें यह समझाना पड़ रहा हो कि इण्डिया को ही भारत भी कहा जा सकता है। हमारी मातृभूमि के दो नाम क्यों है? "भारत माता की जय" वह नारा था, जिसका उच्चारण करना भी अंग्रेजों की नजर में गम्भीर अपराध था, जिसके लिए स्वतंत्रता संग्राम के दौर में असंख्य लोगों ने यातनाएं झेली, सैकड़ों बलिदान हुए, फिर क्यों इस नाम को दूसरे नम्बर या दूसरे दर्जे पर रखा गया? भारत का संविधान क्या "कांस्टीट्यूशन ऑफ इण्डिया" नाम से जाना जाता है या "कांस्टीट्यूशन ऑफ भारत" के रूप में? यदि इण्डिया हमारे देश का नाम है तो राष्ट्रगान में" .... इण्डिया भाग्यविधाता" होना चाहिए, लेकिन ऐसा नहीं है, इसलिए क्यों न "भारत" को "इण्डिया" के स्थान पर रखा जाए? क्या इण्डिया नाम का प्रयोग बनाए रखना मानसिक दासता नहीं है?

वामपंथी रूढ़िवाद से ग्रस्त इसे प्रतिक्रियावादी सोच कह कर खारिज करने का प्रयास भी कर सकते हैं। सेक्यूलर सोच के लोग कह सकते हैं कि नाम में क्या रखा है जबकि देश तो वही है। परन्तु दूसरी तरफ राष्ट्रीय अस्मिता, गौरव, एकता और सांस्कृतिक धरोहर की दृष्टि से नाम में महत्वपूर्ण संभावना हैं केवल इस घोषणा से कि इस देश का नाम भारत है और संविधान, कानून और प्रत्येक जगह पर "इण्डिया" नाम हटाने से एक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आता है, जो राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतिष्ठापन के लिए अत्यन्त आवश्यक है।

यहाँ विश्व के विभिन्न देशों द्वारा किये गये नाम परिवर्तनों का उल्लेख भी अप्रासंगिक नहीं होगा। सीलोन श्रीलंका हो गया, बर्मा म्यांमार में तब्दील हो गया, अफ्रीका के अनेक देशों ने अपने नाम बदले। कम्पूचिया कम्बोडिया हो गया। अर्थात् पूरी दुनिया के अनेक देश अपने नामों में से उपनिवेशवाद की गंध को धो-पोंछ लेना चाहते हैं। इसमें क्या बुराई है? यदि एक नाम हजारों वर्षों से चला आ रहा है, तब उसे अंग्रेजों के दिये नाम से बरकरार रखने में क्या औचित्य है?

इसमें हमारी बुनियादी सोच में परिवर्तन लाने की क्षमता है, जो हमें कर्तव्यबोध कराती है और स्वार्थ से ऊपर उठाती है और जो अपने आप में ही बहुत सी राष्ट्रीय समस्याओं को हल करने में सक्षम है। यह एक निर्विवाद तथ्य है कि स्वतंत्रता संघर्ष के काल में केवल एक "भारत माता की जय" के नारे ने सम्प्रदाय, जाति और भाषा की भिन्नता को भुलाकर देश के निवासियों को एकता के सूत्र में बांध दिया था। इसी ने इस भूमि के प्रत्येक भाग में करोड़ों नौजवानों और वृद्धों के हृदय को आंदोलित कर दिया था। इसी ने "भारतमाता" को विदेशी शासन की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए असंख्य व्यक्तियों को महान बलिदान देने के लिए प्रेरित भी किया था। "भारत" नाम की महत्ता पर और भी विचार करें। हमारे प्राचीन साहित्य में इस भूमि के नाम और गुणों की प्रशंसा में एक पूरा अध्याय ही है यहाँ मैं इससे कुछ श्लोकों को ही उद्धरित करूँगा : "उत्तरं यत् समुद्रस्य हिमाद्रश्चैव दक्षिणम्। वर्षं तद् भारतं नाम भारती यत्र संततिः" (जो देश समुद्र के उत्तर में और हिमालय के दक्षिण में स्थित है, वह भारत है और यहां के निवासी भारतीय हैं)। "अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महामुने। यतो हि कर्मभूरेषा ततोऽन्या भोगभूमयः।" यह भूमि महान है क्योंकि यह कर्मभूमि है, जबकि अन्य देश 'भोगभूमि' है।) जहां प्रथम श्लोक इस भूमि के लिए एक नाम देता है, वहीं दूसरा श्लोक हमारे राष्ट्र के आधारभूत दर्शन की विशेषता प्रकट करता है। मानव प्रकृति के विषय में अनुसंधान कर हमारे पूर्वजों ने "धर्म" "कर्त्तव्य" पर आधारित समाज का निर्माण किया, जिससे एक व्यक्ति को जो अधिकार दिया गया था, वह था कर्तव्य पालन करने का अधिकार, क्यों जहां अधिकार बोध व्यक्ति को संकुचित बनाता है, वहीं कर्तव्य बोध व्यक्ति को व्यापक बनाता है। इसी कारण महात्मा गांधी ने इस पक्ष पर विशेष बल दिया और कहा कि यह भारत भूमि मूलतः "कर्मभूमि" है, जिसका भोगभूमि से अन्तरवैशिष्ट्य है। ये श्लोक केवल इस राष्ट्र की एकता को ही प्रकट नहीं करते, अपितु उनके वैशिष्ट्य को भी उजागर करते हैं। ये राष्ट्रीय अस्मिता के मूल हैं। इन श्लोकों में इन कई गलतियों को सुधारने की क्षमता है, जो हमारे कर्तव्य के विषय में नहीं अपितु केवल "अधिकार" के विषय में सोचने के कारण हुई है। गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ते भारत भूमिभागे (देव भी प्रशंसा गाते हुए कहते हैं कि पृथ्वी का यह भाग "भारत" धन्य है)। मातृभूमि के प्रति शताब्दियों का यह प्रगाढ़ प्रेम अत्यंत संवेदनशील भाषा में इस श्लोक में प्रकट होता है। एक अन्य श्लोक में कहा गया है कि "मुझे यश, विद्वत्ता, किसी अन्य सुख या राजनीतिक प्रभुता की इच्छा नहीं है और न मैं स्वर्ग या मोक्ष की ही कामना करता हूँ। परन्तु मैं चाहता हूँ कि "भारत" में ही मेरा पुनर्जन्म हो, भले ही वह मानव, पशु-पक्षी, जन्तु, वृक्ष या पाषाण के रूप में ही क्यों न हो।" स्वतंत्रता संघर्ष का लक्ष्य ब्रिटिश शासन से छुटकारा पाकर केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना ही नहीं था, अपितु देश के आदर्शों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शासन कायम करना भी था। इसीलिए सर्वप्रथम जिसप्रश्न पर ध्यान देना आवश्यक था, वह था राष्ट्रीय अस्मिता का सवाल। क्योंकि सदियों से विदेशी शासन से हमारी अस्मिता दब सी गयी थी और विदेशी विचार और जीवन पद्धति हमारे ऊपर थोप दिये गये थे। यह थोपी गई मानसिक दासता राजनीतिक दासता से कहीं अधिक हानिकारक साबित हुई। इसलिए राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् हमारा प्रथम कर्तव्य था- अपने जीवन मूल्यों पर आधारित राष्ट्र का पुनर्निर्माण। यही कारण था कि स्वतंत्रता संघर्ष के महानायक महात्मा गांधी ने "स्वदेशी" पर विशेष बल दिया। वे चाहते थे कि राष्ट्रीय कार्य के प्रत्येक क्षेत्र में स्वदेशी की मुहर होनी चाहिए। परन्तु दुर्भाग्यवश, आजादी के बाद इस आदर्श को भुला दिया गया। राष्ट्रीय अस्मिता स्थापित करने की प्रक्रिया में देश का नामकरण अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है।

विशेषकर, हमारे देश के लिए, जिसकी सभ्यता और संस्कृति का इतिहास है। पुरातन काल से ही, अनेक राज्य, भाषा, धर्म, खानपान, रीतिरिवाजों की विभिन्नता होने पर भी इस विशाल देश के निवासियों के मन में एक राष्ट्र की परिकल्पना अवश्य रही है। इस विषय पर प्रकाश डालते हुए प्रदीप जैन मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किये हैं : "इतिहास का यह एक आकर्षक तथ्य है कि भारत राष्ट्र के रूप में न एक सामान्य भाषा के आधार पर और न ही इसके विभिन्न भागों में किसी एकमेव राजनीतिक सत्ता के शासन के कारण उभरा है, अपितु यह शताब्दियों से पनपती हुई एक सामान्य सांस्कृतिक एकता ने, जो देश के निवासियों को एक करने वाले किसी भी अन्य बंधन से कहीं अधिक आधारभूत और अटूट है, इस देश को राष्ट्र का स्वरूप प्रदान किया है। इसी प्रकार, प्राचीनकाल से इस संपूर्ण क्षेत्र के लिए एक ही नाम "भारत" दिया जाना इतिहास का एक रोचक तथ्य है। "भारत" नाम हमारी समृद्ध राष्ट्रीय धरोहर है। यह नाम हमें हमारे सांस्कृतिक मूल्यों महाकाव्यों, हमारे साहित्य, संतों, राष्ट्रपुरुषों, मनीषियों के साथ-साथ हमारे गौरवपूर्ण अतीत और विभिन्नता में एकता की याद दिलाता है। यहां शासन करने वाले ब्रिटिशों ने जो सदैव इस देश का राज करने की इच्छा से हमारी राष्ट्रीय अस्मिता को ही नष्ट करना चाहते थे, इस देश का नाम बदल दिया। उन्होंने इसे "इण्डिया" कहा। इन दोनों नामों के बीच में जो महत्वपूर्ण अन्तर है, उसे एक महान इतिहासकार डॉ. राधाकुमुद मुखर्जी ने स्पट किया है। अपनी पुस्तक "भारत की आधारभूत एकता" में यह स्पष्ट करने के पश्चात् कि हमारे पूर्वज अपनी विशाल मातृभूमि की भौगोलिक एकता के प्रति पूर्णतः जागरूक थे एवं उन्होंने व्यापक जनमानस में इस तथ्य को विभिन्न प्रकार से स्थापित करने के अनेक प्रयास भी किये, डॉ. मुखर्जी ने अपना अन्तिम निष्कर्ष इस प्रकार प्रस्तुत किया है : "इस एकता की भावना की प्रथम अभिव्यक्ति इस तथ्य से होती है कि उन्होंने इस संपूर्ण देश को एक नाम "भारत वर्ष" से घोषित किया है। इस देश को "इण्डिया" नाम विदेशियों ने दिया है। भारतवर्ष नाम इण्डिया की तरह एक भौगोलिक अभिव्यक्ति मात्र नहीं है जो केवल एक प्राकृतिक सीमा को घोषित करता है। इसका एक अत्यन्त गंभीर एवं ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण पहलू है। यह उस आधारभूत एकता को प्रारूपित करता है जिसे इस नामकरण करने वालों ने निश्चित रूप से देखा और समझा था।" क्या अभी भी जन-गण-मन के भारत पर इण्डिया लदा रहेगा? गुलामी के अवशेष यह राष्ट्र कब तक ढोएगा? अंग्रेजों का सांस्कृतिक उपनिवेश यहाँ कब तक कायम रहेगा? भारत के संविधान और विधि विधान से "इण्डिया" हटा देना चाहिए।

वेदाचार्य, दर्शनाचार्य, व्याकरणाचार्य वैदिक विद्वान पूज्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह

आर्य समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान् प्रधान शम्भू दयाल संन्यास आश्रम, गाजियाबाद का सार्वजनिक अभिनन्दन आगामी 15 मार्च, 2015 को स्वामी इन्द्रवेश विद्यापीठ, टिटौली, रोहतक (हरियाणा) में किया जायेगा। इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से हजारों आर्यजन एवं स्वामी जी महाराज के शिष्य पधारकर उनका अभिनन्दन करेंगे। इस अवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जायेगा जिसमें स्वामी जी महाराज के जीवनवृत्त, विभिन्न विद्वानों के संस्मरण, शुभकामना संदेश एवं चित्रावली प्रकाशित की जायेगी। समस्त विद्वानों, संन्यासियों एवं स्वामी जी के शुभचिन्तकों से निवेदन है कि वे अपने संक्षिप्त संस्मरण तथा स्वामी जी का कोई चित्र यदि उनके पास हो तो शीघ्रातिशीघ्र भेजने की कृपा करें जिससे उसे स्मारिका में स्थान दिया जा सके।

– स्वामी आर्यवेश, अध्यक्ष स्वामी चन्द्रवेश अभिनन्दन समिति

स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती द्वारा जनसेवा के कार्य

सुना बेड़ा अभयराण्य के जुनापाली ग्राम में कम्बल वितरण करते हुए स्वामी धर्मानन्द जी महाराज

सुन्दरगढ़ जिले के गेलेईबाहाल में ग्राम में कम्बल वितरण हुए स्वामी व्रतानन्द जी महाराज

thearyasamaj.org

28 जनवरी जयन्ती पर विशेष

स्वदेश, स्वधर्म तथा स्व-संस्कृति के लिए बलिदान होने वाले आर्य समाजी नेता लाला लाजपत राय

आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है।
- लाला लाजपत राय

सुप्रसिद्ध देशभक्त तथा भारत की आजादी के आन्दोलन के प्रखर नेता लाला लाजपतराय का नाम ही देशवासियों में स्फूर्ति तथा प्रेरणा का संचार करता है। उन्होंने वैश्य परिवार में जन्म लेकर क्षत्रियोचित गुण पाये थे। स्वदेश, स्वधर्म तथा स्वसंस्कृति के लिए उनमें जो प्रबल प्रेम तथा आदर था उसी के कारण वे स्वयं को राष्ट्र के लिए समर्पित कर अपना जीवन दे सके। भारत को स्वाधीनता दिलाने वाले महापुरुषों में उनका त्याग, बलिदान तथा देशभक्ति अद्वितीय और अनुपम थी, उनके बहुविध क्रियाकलाप में साहित्य लेखन एक महत्वपूर्ण आयाम है। वे उर्दू तथा अंग्रेजी के समर्थ रचनाकार थे।

बाल्यकाल : लालाजी का जन्म 28 जनवरी 1865 को अपने ननिहाल के गांव ढुंढिके (जिला फरीदकोट, पंजाब) में हुआ था। उनके पिता लाला राधाकृष्ण लुधियाना जिले के जगरांव कस्बे के निवासी अग्रवाल वैश्य थे।

लाजपतराय की शिक्षा पांचवें वर्ष में आरम्भ हुई। 1880 में उन्होंने कलकत्ता तथा पंजाब विश्वविद्यालय से एण्ट्रेंस की परीक्षा एक ही वर्ष में पास की और आगे पढ़ने के लिए लाहौर आये। यहां वे गवर्नमेंट कालेज में प्रविष्ट हुए और 1882 में एफ. ए. की परीक्षा तथा मुख्तारी (कानून) की परीक्षा साथ-साथ पास की। 1882 में ही वे लाहौर रहते हुए आर्यसमाज के सम्पर्क में आये और उसके सदस्य बन गये। डी. ए. वी. कालेज लाहौर के प्रथम प्राचार्य लाला (आगे चल कर महात्मा के नाम से प्रसिद्ध) हंसराज तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् पं. गुरुदत्त उनके सहपाठी थे, जिनके साथ उन्हें आगे चलकर आर्यसमाज का कार्य करना पड़ा। इनके द्वारा ही उन्हें महर्षि दयानन्द के विचारों का परिचय मिला था।

30 अक्तूबर, 1883 को जब अजमेर में ऋषि दयानन्द का देहान्त हो गया तो 9 नवम्बर, 1883 को लाहौर आर्यसमाज की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया गया। इस सभा के अन्त में यह निश्चय हुआ कि स्वामी जी की स्मृति में एक ऐसे महाविद्यालय की स्थापना की जाये, जिसमें वैदिक साहित्य, संस्कृत तथा हिन्दी की उच्च शिक्षा के साथ-साथ अंग्रेजी और पाश्चात्य ज्ञान विज्ञान में भी छात्रों को दक्षता प्राप्त कराई जाये। 1886 में जब इस शिक्षण संस्था की स्थापना हुई तो आर्य समाज के अन्य नेताओं के साथ लाला लाजपतराय का भी इसके संचालन में महत्वपूर्ण योगदान रहा तथा वे कालान्तर में डी. ए. वी. कालेज लाहौर के महान् स्तम्भ बने।

वकालत के क्षेत्र में :- लाला लाजपतराय ने एक मुख्तान (छोटा वकील) के रूप में अपने मूल निवास स्थान जगरांव में ही वकालत आरम्भ कर दी थी, किन्तु यह कस्बा बहुत छोटा था, जहाँ उनके कार्य के बढ़ने की अधिक सम्भावना नहीं थी। अतः वे रोहतक चले गये। रोहतक रहते हुए ही उन्होंने 1885 में वकालत की परीक्षा उत्तीर्ण की 1886 में वे हिसार आ गये। एक सफल वकील के रूप में 1892 तक वे यहीं रहे और इसी वर्ष में वे लाहौर आये तब से लाहौर ही उनकी सार्वजनिक गतिविधियों का केन्द्र बन गया। लालाजी ने यों तो समाज सेवा का कार्य हिसार में रहते हुए ही आरम्भ कर दिया था, जहां उन्होंने लाला चंदूलाल, पं. लखपतराय और लाला चूड़ामणि जैसे आर्यसमाजी कार्यकर्ताओं के साथ सामाजिक हित की योजनाओं के क्रियान्वयन में योगदान किया, किन्तु लाहौर आने पर वे आर्य समाज के अतिरिक्त राजनैतिक आन्दोलन के साथ जुड़ गये। 1888 में वे प्रथम बार कांग्रेस के इलाहाबाद अधिवेशन में सम्मिलित हुए जिसकी अध्यक्षता मि0 जार्ज यूल ने की थी। 1907 में वे पं0 गोपाल कृष्ण गोखले के साथ कांग्रेस के एक शिष्टमण्डल के सदस्य के रूप में इंग्लैण्ड गये। यहां से वे अमेरिका चले गये। उन्होंने एकाधिक बार विदेश यात्रायें की और वहां रह कर पश्चिमी देशों के समक्ष भारत की राजनैतिक परिस्थिति की वास्तविकता से वहां के लोगों को परिचित कराया तथा उन्हें स्वाधीनता आन्दोलन की जानकारी दी।

लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों लोकमान्य तिलक तथा विपिन चन्द्र पाल के साथ मिलकर कांग्रेस में उग्र विचारों का प्रवेश कराया। 1885 में अपनी स्थापना से लेकर लगभग बीस वर्षों तक कांग्रेस ने एक राजभक्त संस्था का चरित्र बनाये रक्खा था। इसके नेतागण वर्ष में एक बार बड़े दिन की छुट्टियों में देश के किसी नगर में एकत्रित होते और विनम्रतापूर्वक शासन के सूत्रधारों (अंग्रेजों) से सरकारी उच्च सेवाओं में भारतीयों को अधिकाधिक संख्या में प्रविष्ठ करने की याचना करते। वे कभी-कभी औपनिवेशिक स्वराज्य की बात भी करते थे। उनदिनों कांग्रेस के अधिवेशनों की समाप्ति 'गॉड सेव दि किंग' के गाान के साथ होती थी। 1905 में जब बनारस में सम्पन्न हुए कांग्रेस के अधिवेशन में ब्रिटिश युवराज के भारत आगमन पर उनका स्वागत करने का प्रस्ताव आया तो लालाजी ने उसका डट कर विरोध किया। यों समझना चाहिएकि उस भाषण सेही कांग्रेस में गरम दल की नींव पड़ गई। कांग्रेस के मंच से यह अपनी किस्म का पहला तेजस्वी भाषण हुआ जिसमें देश की अस्मिता प्रकट हुई थी। इसे सुनकर अध्यक्ष पं. गोपालकृष्ण गोखले के दोनों ओर बैठे कांग्रेस के बयोवृद्ध नेता और विशेषतः मुम्बई के प्रतिनिधि तो कांपने लगे, डर से उनके चेहरे पीले पड़ गये। 1907 में जब पंजाब के किसानों में अपने अधिकारों को लेकर चेतना उत्पन्न हुई तो सरकार का क्रोध लाला जी तथा सरदार अजीतसिंह (शहीद भगतसिंह के चाचा) पर उमड़ पड़ा और इन दोनों देशभक्त नेताओं को देश से निर्वासित कर उन्हें पड़ौसी देश बर्मा के मांडले नगर में नजरबंद कर दिया। देशवासियों द्वारा सरकार के इस दमनपूर्ण कार्य का प्रबल विरोध किया गया और विवश होकर सरकार को अपना यह आदेश वापिस लेना पड़ा। लालाजी पुनः स्वदेश आये और देशवासियों ने उनका भावभीना स्वागत किया। लाला जी के राजनैतिक जीवन की कहानी अत्यन्त रोमांचक तो है ही, भारतवासियों को स्वदेशहित के लिए बलिदान तथा

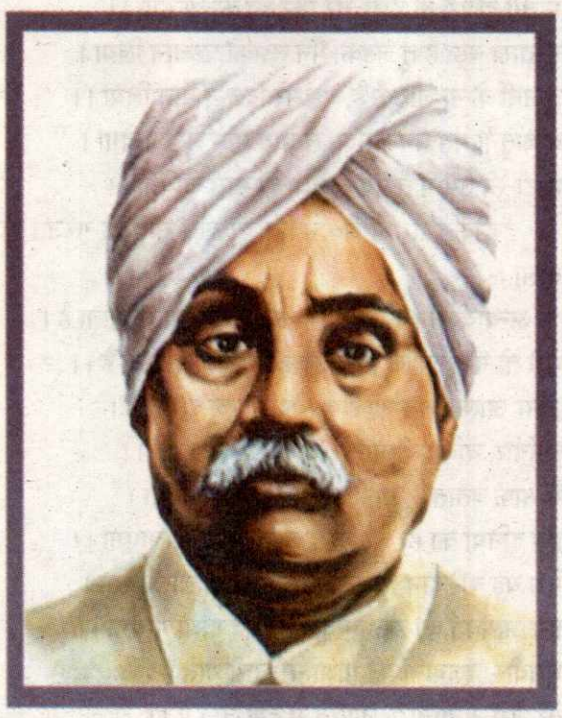

महान् त्याग करने की प्रेरणा भी देती है।

जन सेवा के कार्यः- लालाजी केवल राजनैतिक नेता और कार्यकर्ता ही नहीं थे। उन्होंने जनसेवा का भी सच्चा पाठपढ़ा था। जब 1896 तथा 1899 (इसे राजस्थान में छप्पन का अकाल कहते हैं, क्योंकि यह विक्रम का 1956 का वर्ष था) में उत्तर भारत में भयंकर अकाल पड़ा तो लाला जी ने अपने साथी लाला हंसराज के सहयोग से अकाल पीड़ित लोगों को सहायता पहुंचाई। जिन अनाथ बच्चों को ईसाई पादरी अपनाने के लिए तैयार थे और अन्ततः जो उनका धर्म परिवर्तन करने का इरादा रखते थे। उन्हें इन मिश्नरियों के चंगुल से बचा कर उन्हें फिरोजपुर तथा आगरा के आर्य अनाथालयों में भेजा। 1905 में कांगड़ा (हिमांचल प्रदेश) में भयंकर भूकम्प आया?। इस समय भी लालाजी सेवा कार्य में जुट गये और डी. ए. वी. कालेज, लाहौर के छात्रों के साथ भूकम्प पीड़ितों को रहात प्रदान की। 1907-08 में उड़ीसा मध्य प्रदेश तथा संयुक्त प्रान्त (वर्तमान उत्तर प्रदेश) में भी भयंकर दुर्भिक्ष पड़ा और लालाजी को पीड़ितों की सहायता के लिए आगे आना पड़ा।

पुनः राजनैतिक आन्दोलन में:- 1907 सूरत के प्रसिद्ध कांग्रेस अधिवेशन में लाला लाजपतराय ने अपने सहयोगियों के द्वारा राजनीति में गरम दल की विचारधारा का सूत्रपात कर दिया था और जनता को यह विश्वास, दिलाने में सफल हो गये थे कि केवल प्रस्ताव पास करने और गिड़गिड़ाने से स्वतंत्रता मिलने वाली नहीं है। हम यह देख चुके हैं कि जन-भावना को देखते हुए अंग्रेजों को उनके देश निर्वासन को रद्द करना पड़ा था। वे स्वदेश आये और पुनः स्वाधीनता के संघर्ष में जुट गये। प्रथम विश्वयुद्ध 1914-1918 के दौरान वे एक प्रतिनिधि मण्डल के सदस्य के रूप में पुनः इंग्लैण्ड गये और देश की आजादी के लिए प्रबल जनमत जागृत किया। वहां से वे जापान होते हुए अमेरिका वासियों के समक्ष भारत की स्वाधीनता का पक्ष प्रबलता से प्रस्तुत किया। यहां उन्होंने इण्डियन होमरूललीग की स्थापना की तथा कुछ ग्रन्थ भी लिखे। 20 फरवरी, 1920 को जब वे स्वदेश लौटे तो अमृतसर में जलियां वाला बाग काण्ड हो चुका था और सारा राष्ट्र असन्तोष तथा क्षोभ की ज्वाला में जल रहा था। इसी बीच महात्मा गांधी ने असहायोग आन्दोलन आरम्भ किया तो लालाजी पूर्ण तत्परता के साथ इस संघर्ष में जुट गये। 1920 में ही वे कलकत्ता में आयोजित कांग्रेस के विशेष अधिवेशन के अध्यक्ष बने। उन दिनों सरकारी शिक्षण संस्थाओं के बहिष्कार, विदेशी वस्त्रों के त्याग, अदालतों का बहिष्कार शराब के विरुद्ध आन्दोलन, चरखा और खादी का प्रचार जैसे कार्यक्रमों को कांग्रेस ने अपने हाथ में ले रक्खा था, जिसके कारण जनता में एक नई चेतना का प्रादुर्भाव हो चला था। इसी समय लालाजी को कारावास का दण्ड मिला, किन्तु खराब स्वास्थ्य के कारण वे जल्दी ही रिहा कर दिये गये।

1924 में लालाजी कांग्रेस के अन्तर्गत ही बनी स्वराज पार्टी में शामिल हो गये और केन्द्रीय धारा सभा (सैण्ट्रल असेम्बली) के सदस्य चुन लिये गये। जब उनका पं. मोतीलाल नेहरू से कतिपय राजनैतिक प्रश्नों पर मतभेद हो गया तो उन्होंने नेशनलिस्ट पार्टी का गठन किया और पुनः असेम्बली में पहुंच गये। अन्य विचारशील नेताओं की भांति लालाजी भी कांग्रेस में दिन-प्रतिदिन बढ़ने वाली मुस्लिम तुष्टिकरण की नीति से अप्रसन्नता अनुभव करते थे, इसलिए स्वामी श्रद्धानन्द तथा पं. मदनमोहन मालवीय के सहयोग से उन्होंने हिन्दू महासभा के कार्य को आगे बढ़ाया। 1925 में उन्हें हिन्दू महासभा के कलकत्ता अधिवेशन का अध्यक्ष भी बनाया गया। ध्यातव्य है कि उन दिनों हिन्दू महासभा का कोई स्पष्ट राजनैतिक कार्यक्रम नहीं था और वह मुख्य रूप से हिन्दू संगठन अछूतोद्धार, शुद्धि जैसी सामाजिक कार्यक्रमों में ही दिलचस्पी लेती थी। इसी कारण कांग्रेस से उसका थोड़ा सा भी विरोध नहीं था।

यद्यपि संकीर्ण दृष्टि के अनेक राजनैतिक कर्मी, लालाजी के हिन्दू महासभा में रुचि लेने से नाराज भीहुए किन्तु उन्होंने इसकी कभी परवाह नहीं की और वे अपने कर्त्तव्यपालन में ही लगे रहे।

जीवन सन्ध्याः- 1928 में जब अंग्रेजों द्वारा नियुक्त साइमन कमीशन भारत आया तो देश के नेताओं ने उसका बहिष्कार करने का निर्णय लिया। 30 अक्टूबर, 1928 को कमीशन लाहौर पहुंचा तो जनता के प्रबल प्रतिरोध को देखते हुए सरकार ने धारा 144 लगा दी। लालाजी के नेतृत्व में नगर के हजारों लोग कमीशन के सदस्यों को काले झण्डे दिखाने के लिए रेलवे स्टेशन पहुंचे और 'साइमन वापस जाओ' के नारों से आकाश गुंजा दिया। इस पर पुलिस को लाठी चार्ज का आदेश मिला। इसी समय अंग्रेज सार्जेंट साण्डर्स ने लालाजी की छाती पर लाठी का प्रहार किया जिससे उन्हें सख्त चोट पहुंची। उसी सायं लाहौर की एक विशाल जनसभा में एकत्रित जनता को सम्बोधित करते हुए नरकेसरी लालाजी ने गर्जना करते हुए कहा- मेरे शरीर पर पड़ी लाठी की प्रत्येक चोट अंग्रेजी साम्राज्य के कफन की कील का काम करेगी। इस दारुण प्रहार से आहत लालाजी ने अठारह दिन तक विषम ज्वर की पीड़ा भोग कर 17 नवम्बर, 1928 को परलोक के लिए प्रस्थान किया।

बहुआयामी व्यक्तित्वः- लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व बहुआयामी था। वे एक साथ ही उत्कृष्ट वक्ता, श्रेष्ठ लेखक, सार्वजनिक कार्यकर्ता, सेवाभावी समाज सेवक, राजनैतिक नेता, शिक्षा शास्त्री, चिन्तक, विचारक तथा दार्शनिक थे। आर्य सामज से ही उन्होंने देश सेवा का पाठ पढ़ा था और स्वामी दयानन्द से उन्होंने समर्पण तथा सेवा का आदर्श ग्रहण किया था। उनके शब्दों में आर्यसमाज मेरी माता तथा स्वामी दयानन्द मेरे धर्मपिता हैं। मैंने देश सेवा का पाठ आर्य समाज से ही पढ़ा है। लालाजी के बलिदान के पश्चात् देशबंधु चितरंजनदास की पत्नी श्रीमती बसन्ती देवी ने एक वक्तव्य प्रसारित कर कहा था कि क्या देश में कोई ऐसा क्रांतिकारी युवक नहीं है जो भारत केसरी लालाजी की मौत का बदला ले सके।

जब यह बात सरदार भगतसिंह तक पहुँची तो उसने लालाजी पर लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डर्स को मार कर उस अमर देशभक्त की मौत का बदला ले लिया। लाला लाजपतराय देश के स्वाधीनता संग्राम के महान् सेनानी थे। देशवासी उनके त्याग और बलिदान को सदा स्मरण रखेंगे।

thearyasamaj.org

धर्म शहीद बाल हकीकत राय और बसन्त पंचमी

– पं. नन्दलाल निर्भय, पत्रकार

हमारा प्यारा आर्यवर्त (भारत वर्ष) ईश्वर भक्त, धर्मात्माओं, वीर शहीदों की पावन भूमि है। जिन वीरों ने देश धर्म मानवता की रक्षा में अपना जीवन न्यौछावर कर दिया था उन्हीं वीरों में से एक था धर्म शहीद बाल हकीकत राय। हकीकत राय का बलिदान मोहम्मद शाह रंगीला के शासनकाल में बसन्त पंचमी के दिन सन् 1734 ई. में हुआ था। उसकी याद में अभी-भी आर्य समाज तथा अन्य धार्मिक संस्थाएं बसन्त पंचमी के दिन शहीद दिवस धूमधाम से मनाती हैं।

हकीकत राय का जन्म सन् 1719 ई. में सियालकोट पूर्व पंजाब (पाकिस्तान) में हुआ था। उसके पिता का नाम भागमल महाजन तथा माता का नाम कौरा देवी था। बाल-विवाह की प्रथा के अनुसार अज्ञानता वश हकीकत राय का विवाह सन् 1732 ई. में बटाला की लक्ष्मी देवी के साथ कर दिया गया था। हकीकत राय के माता-पिता धार्मिक तथा ईश्वर भक्त थे इसलिए हकीकत राय भी धार्मिक वृत्ति का था।

हकीकत राय को सात वर्ष की आयु में सियालकोट के एक मदरसे में (पाठशाला) में प्रवेश दिलाया गया। वह कुशाग्र बुद्धि का बालक था। इसलिए मौलवी साहिब (अध्यापक) उससे बेहद प्यार करते थे। यह देखकर मुसलमान बच्चे हकीकत राय से भारी ईर्ष्या करते थे।

एकदिन मौलवी साहिब जरूरी काम से पाठशाला से बाहर चले गए तथा पाठशाला की देखभाल करना हकीकत राय को सौंप गए। मौलवी साहिब के चले जाने पर मुस्लिम बच्चों ने हुड़दंग मचाना शुरू कर दिया। हकीकत राय ने जब उन्हें ऐसा करने से रोका तो उन्होंने हकीकत राय को गालियां दी और बुरी तरह पीटा। मौलवी साहिब के आने पर हकीकत राय ने उन्हें सारा किस्सा सुना दिया। मौलवी साहिब ने हकीकत राय को पुचकार कर अपनी छाती से लगा लिया तथा मुसलमान बच्चों को दण्डित किया। मुसलमान बच्चों ने नाराज होकर हकीकत राय पर बीबी फातिमा को गालियाँ देने और मौलवी साहिब पर हकीकत राय की तरफदारी करने का आरोप लगाकर नगर के काजी सुलेमान से दोनों की शिकायत की। उन दिनों काजियों का बोलबाला था। इसलिए काजी सुलेमान ने हकीकत राय को मुसलमान बनाने का फतवा जारी कर दिया तथा घोषणा कर दी कि अगर हकीकत राय मुसलमान न बने तो उसका सिर कटवा दिया जाए। काजी ने फतवा जारी करके मामला नगर के हाकिम अमीर बेग को सौंप दिया। अमीर बेग एक शरीफ आदमी था उसने काजी सुलेमान को समझाया कि यह बच्चों का झगड़ा है, इसे ज्यादा बढ़ाना समझदारी नहीं है, किन्तु काजी नहीं माना। कुछ मुसलमान भी काजी के समर्थक बन गए इसलिए अमीर बेग ने सारा मामला लाहौर के नबाब सफेद खान की अदालत में भेज दिया। भागमल और कौरा देवी कुछ हिन्दुओं को साथ लेकर लाहौर पहुँचे और नवाब से हकीकत राय को माफ कर देने की प्रार्थना की।

लाहौर के नवाब ने सारे मामले को ध्यान से पढ़ा और सुना। दोनों पक्षों की बातें सुनकर तथा हकीकत राय की सुन्दरता, कम उम्र को देखकर हकीकत राय से खुश होकर कहा।

'बाल हकीकत राय! मान तू, बात एक बेटा मेरी।
मुसलमान बन, जान बचा ले, ज्यादा मत कर तू देरी।।
अपनी प्यारी सुन्दर बेटी, के संग निकाह करा दूंगा।
अपनी सारी दौलत का मैं, मालिक तुझे बना दूंगा।।
रख मेरा विश्वास लाड़ले, बैठा मौज उड़ाएगा।
इस सूबे का हर नर-नारी, तेरा हुक्म बजाएगा।।
सोच-समझ ले बेटा मन में, बात अगर ना मानेगा।
पछताएगा जीवन भर तू, यदि ज्यादा जिद ठानेगा।।'

नवाब की बातें सुनकर हकीकत राय ने गम्भीरता पूर्वक नवाब से पूछा :- "अय नवाब साहिब, आप मुझे पहले एक बात बता दो यदि मैं मुसलमान बन जाऊँ तो मैं कभी मरूँगा तो नहीं? उन काजी और मौलवियों से भी पूछ लो कि ये और आप भी क्या सदा जीवित रहोगे?" नवाब ने सिर नीचा करके कहा :- "हकीकतराय संसार में जो जन्म लेता है वह अवश्य ही मरता है मैं भी मरूँगा, तू भी मरेगा और काजी, मौलवी भी जरूर मरेंगे। बेटा मैं पुत्रहीन हूँ अगर तू मेरी दुख्तर से निकाह कर लेगा तो मेरी सारी सम्पत्ति का मालिक बन जायेगा और जीवन भर मौज उड़ाएगा। अरे हकीकत राय, अब तू ठीक तरह सोच-समझकर उत्तर दे बेटा।"

नवाब का प्रस्ताव सुनकर हकीकत राय मुस्कारते हुए बोला -

'यह सृष्टि का है नियम अटल, जो इस दुनिया में आता है।
वह कर्मों का फल पाता है, ईश्वर न्यायकारी दाता है।।
जब आप मानते हो इसको, मृत्यु सबको खा जाती है।
वह घोरनर्क में जायेगा, जो नर पापी उत्पाती है।।
मैं राम, कृष्ण का वंशज हूँ, मैं वैदिक धर्म निभाऊँगा।
लालच के चक्कर में फंसकर, इस्लाम नहीं अपनाऊँगा।।'

हकीकत राय का उत्तर सुनकर नवाब भारी नाराज हो गया। और हकीकत राय पर रौब ज़माते हुए बोला:-

'तू कान खोलकर सुन लड़के, मैं अब जल्लाद बुलाऊँगा।
मैं तेग दुधारी के द्वारा, तेरे सिर को कटवाऊँगा।।
गुस्ताख बड़ा है तू लड़के, मैंने तुझको पहचान लिया।
तू नर्मी के ना लायक है, यह मेरे दिल ने मान लिया।।
तू बातूनी मत बन ज्यादा, ले बात मान सुख पायेगा।
छोटी-सी उम्र में तू पगले, वृथा ही मारा जायेगा।।

हकीकत राय ने जब नवाब की बातें सुनी तो गरजते हुए बोला :-

'तू अन्यायी सुन कान खोल, क्यों ज्यादा बात बनाता है।
मेरी तो मौत सहेली है, तू जिसका खौफ दिखाता है।।
अमर आत्मा, तन नश्वर है, वेद, शास्त्र दर्शाते हैं।
धर्मवीर, बलिदानी मानव, जग में पूजे जाते हैं।।
मैं साफ बताता हूँ पापी, तू घोर नर्क में जायेगा।
इस दुनिया का हर नर-नारी, अत्याचारी बतलाएगा।।
मेरा यह बलिदान, दुष्ट सुन, कभी न खाली जायेगा।
इस आर्यवर्त का हर मानव, वीरों की गाथा गायेगा।।
धर्मवीर, बलवानों की गाथा नर-नारी गाते हैं।
तेरे जैसे अत्याचारी, नफरत से देखे जाते हैं।।

हकीकत राय की निर्भीकता देखकर नवाब आपे से बाहर हो गया और उसने जल्लाद को बुलाकर हकीकत राय का सिर काटने का हुक्म दे दिया। हकीकत राय उस समय हंस रहा था। जल्लाद ने जब हकीकत राय की कम उम्र और सुन्दर सूरत को देखा तो उसका भी पत्थर दिल पिघल गया तथा तलवार उसके हाथ से गिर गई। यह देखकर हकीकत राय ने जल्लाद को समझाते हुए कहा :- 'अरे भाई जल्लाद! तू अपना फर्ज पूराकर और मुझे भी अपना धर्म निभाने दे। कहीं मेरी वजह से तेरे ऊपर भी कोई मुसीबत न आ जाए।' जल्लाद ने अपने आसुओं को पोंछकर तलवार को उठाकर हकीकत राय की गर्दन पर भरपूर वार किया जिससे हकीकत राय का सिर कटकर धरती पर लुढक गया। धन्य था धर्म शहीद बाल हकीकत राय जिसने अपना सिर कटवाकर भारत माता का मस्तक संसार में ऊँचा कर दिया। जब तक सूरज, चाँद, सितारे और पृथ्वी रहेगी यह संसार उस वीर शहीद की बलिदान गाथा गाता रहेगा।

सज्जनों! कुछ लोगों का विचार है कि बाल हकीकत राय का बलिदान मुगल बादशाह शाहजहाँ के शासनकाल में हुआ था तथा शाहजहां ने न्याय करते हुए नवाब और काजियों, मौलवियों को मृत्यु दण्ड दिया था किन्तु यह कथन सत्य से कोसों दूर एवं निराधार है। शाहजहां के पुत्र औरंगजेब की मृत्यु सन् 1707 ई. में हुई थी तथा हकीकत राय का बलिदान सन् 1734 ई. में हुआ था फिर उस समय शाहजहाँ कहाँ से आ गया? वास्तव में यह मुसलमान शासकों की चाल है। हमें विधर्मी लोगों के षड्यन्त्रों से सदैव सावधान रहना चाहिए। सच्चाई तो यह है कि उस समय मोहम्द शाह रंगीला का कुशासन था जो शराब पीकर औरतों के साथ दिल्ली के लालकिले में नाचता रहता था। ज्ञातव्य है कि ईरान के हमलावर नादिरशाह ने उसे शराब पिये हुए जनाने कपड़ों में गिरफ्तार करके उसके हरम की हजारों स्त्रियों को अपने सैनिकों में बाँट दिया था तथा तख्ते ताउस को लूटकर ईरान ले गया था।

आर्यों! आज भारत में छुआछूत, ऊँच-नीच, जाति-पाति का बोलबाला है। उग्रवाद, आतंकवाद बढ़ रहा है। भारत के नेतागण भ्रष्टाचार की कीचड़ में लिप्त है। विधर्मी लोग रात-दिन भारत की गरीब जनता को ईसाई, मुसलमान बनाने में लगे हुए हैं। धर्म के नाम पर पशु-पक्षियों की बलि दी जाती है। सीमा पर चीन और पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने को तैयार खड़े हैं। ऐसे घोर संकट में भारत को वीर शहीद हकीकत राय जैसे ईश्वर भक्त, धर्मात्मा, देश भक्त युवक-युवतियों की आवश्यकता है। परमात्मा से अन्त में यही प्रार्थना है :-

हे भगवान दया के सागर, भारत पर तुम कृपा कर दो।
भारत माँ की गोद दयामय, वीर सपूतों से अब भर दो।।
वीर हकीकत राय सरीखे, भारत में पैदा हो बच्चे।
धर्मवीर ईश्वर विश्वासी, आन-बान के हो जो सच्चे।।
जिससे ऋषियों का यह भारत, सारे जग का गुरु कहलाए।
भूखा-नंगा आर्यवर्त में, कोई कहीं नजर ना आए।।

- ग्राम व डाकघर- बहीन, तहसील, हथीन,
जिला-फरीदाबाद (हरियाणा)

जीवन यात्रा

– बाबूराम शर्मा विभाकर

जीवन है यात्रा, यात्रा हो निष्कंटक,
इसीलिए मन में उत्साह घना रखना।
मानव क्यूँ आया है तू इस धरती पर,
सोच-समझ ले अपने आने का कारण।
बहुत योनियों में रहकर आया होगा,
कोई है निश्चित जो तेरा है तारण।
सभी कारणों का अन्तिम कारण है जो,
उससे ही अपना सम्बन्ध बनाये रखना।
सभी इन्द्रियाँ यश वाली हो जायेंगी,
मन को केन्द्रित करके जीवन-व्यापन हो।
आत्मा के रथ में ये जुटे हुए घोड़े,
आत्मा से ही तो शुभदा संचालक हो।
जीवन तो चलने का नाम हुआ करता,
गतिवाला हो जीवन बस चलते चलना।
कर्मशीलता पुरुषार्थी का जीवन जी,
उसमें ही उद्देश्य छुपा है जीवन का।
कभी नहीं घबराना कंकरीले पथ में,
खरा उतरना रहकर संकल्पित मन का।
निज की सुन्दर परिभाषा देनी होगी,
प्राणों की ऊर्जा में जीवन का तपना।

- 52/2, लाल क्वाटर्स, गाजियाबाद (उ. प्र.)

thearyasamaj.org

आर्य समाज की गतिविधियाँ

गुरुकुल आश्रम आमसेना का 48वाँ वार्षिक महोत्सव दिनांक 7 से 9 फरवरी, 2015 तक

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी उड़ीसा में आर्यों के तीर्थस्थल गुरुकुल आश्रम आमसेना का 48वाँ वार्षिक महोत्सव माघ, शुक्ल अष्टमी, नवमी और दशमी तदनुसार 7 से 9 फरवरी, 2015 (शुक्रवार से रविवार) को अत्यन्त हर्षोल्लास के साथ मनाया जायेगा। इस अवसर पर पूज्य स्वामी आर्यवेश जी (हरियाणा), पूज्य स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती (गुरुकुल गौतमनगर, दिल्ली), पूज्य स्वामी विशुद्धानन्द जी (उड़ीसा), पूज्य स्वामी सोमवेश जी, पूज्य स्वामी अभेदानन्द जी (भुवनेश्वर), इं. प्रियव्रतदास जी, श्री वीरेन्द्र जी पण्डा, श्री विकास पण्डा, श्री अरुण जी अब्रोल, डॉ. सोमदेव जी शास्त्री (मुम्बई), पं. सुरेन्द्र पाल (नागपुर), डॉ. पूर्णसिंह जी डबास (प्रधान, आर्य समाज साकेत), श्री जुएल ओराम (आदिवासी विकास राज्यमंत्री, भारत सरकार), स्वामी सुमेधानन्द जी (सांसद सीकर, राजस्थान), डॉ. योगानन्द जी शास्त्री (पूर्व विधानसभा अध्यक्ष, दिल्ली), श्री ए. वी. स्वामी (सांसद, नुआपड़ा), डॉ. सत्यपाल जी (सांसद, उ. प्र.), श्री प्रवेश जी वर्मा (सांसद, दिल्ली), श्री बसन्त पण्डा जी (विधायक, नुआपड़ा), श्री राजेन्द्र धोलकिया (पूर्व विधायक, नुआपड़ा) आदि अनेक आर्य विद्वान्, भजनोपदेशक तथा अनेक राजनेताओं को आमंत्रित किया गया है।

ब्रह्मपारायण ऋग्वेद महायज्ञ

महोत्सव के अवसर पर चौ. शीशराम आर्य की पुण्य स्मृति में 1 फरवरी से भगवान की दिव्यवाणी ऋग्वेद के पावन मंत्रों से महायज्ञ पं. विशिकेशन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा। यज्ञ की पूर्णाहुति 9 फरवरी को प्रातः 11 बजे श्रद्धामय वातावरण में सम्पन्न होगी। सभी यज्ञप्रेमी सज्जन इस महायज्ञ में यजमान बनकर घी, सामग्री आदि देकर पुण्य के भागी बनें।

तीन विद्वानों का सम्मान

महोत्सव के शुभअवसर पर चौ. मित्रसेन आर्य की पुण्य स्मृति में परममित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से 8 फरवरी को तीन विद्वानों को शॉल, श्रीफल तथा 15,000/- रुपये की थैली से सम्मानित किया जायेगा।

गुरुकुल के नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के माता-पिता का सम्मान

गुरुकुल आमसेना में देश, समाज की रक्षा हेतु जिन ब्रह्मचारियों ने आजीवन नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की है उनके माता-पिता का सम्मान किया जायेगा।

80 वर्ष से अधिक आयु वाले आर्य समाज के सेवाव्रती बुजुर्गों का सम्मान

आर्य समाज के समर्पित 80 वर्ष से अधिक सेवाव्रती बुजुर्गों का सम्मान भी इस उत्सव के शुभ अवसर पर किया जायेगा।

गुरुकुल सम्मेलन

गुरुकुल सम्मेलन का आयोजन 8 फरवरी को होगा। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के द्वारा अनेक प्रकार के योगासन, प्राणायाम, मुद्गर, धनुर्विद्या, तलवारचालन, छड़ मोड़ना, छाती में पत्थर फोड़ना, जंजीर तोड़ना आदि रोमांचक एवं आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन श्री डॉ. कुञ्जदेव जी मनीषी के नेतृत्व में होगा।

दानदाताओं से नम्र निवेदन

आप सब जानते हैं कि पिछड़े इलाके में यह गुरुकुल तथा इससे सम्बन्धित अन्य संस्थायें उदारमना वैदिक धर्म प्रेमी दानदाताओं के सात्विक सहयोग से ही चल रही है। अतः महोत्सव के पावन अवसर पर किसानबन्धु भी अन्न-धनादि का अधिक से अधिक दान देकर अपने परिश्रम की कमाई को पवित्रकर पुण्य के भागी बनें।

विशेष : गुरुकुल को दिया गया दान 80-जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।

खाते का नाम : आचार्य गुरुकुल आश्रम आमसेना

खाता संख्या - 11276777048 आई. एफ. एस. कोड- SBIN0007078

- निवेदक- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, संचालक, महाविद्यालय गुरुकुल आश्रम आमसेना, खरियार रोड, जिला-नुआपड़ा (उड़ीसा)-766109

सम्पर्क सूत्र : 9437070541/615, 9937469581, 8895575453

आर्य समाज, सिहानी, जिला-गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव समारोह पूर्वक सम्पन्न सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश तथा कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी भी उत्सव में पधारे

आर्य समाज सिहानी, जिला-गाजियाबाद का वार्षिकोत्सव 2 जनवरी से 4 जनवरी, 2015 तक हर्षोल्लास के वातावरण में मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री, युवा भजनोपदेशक श्री अमित आर्य तथा आचार्य बलजीत सिंह आदि ने भजनों तथा प्रवचनों के माधयम से प्रभावशाली वेद प्रचार किया। 3 जनवरी को सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कार्यक्रम में सम्मिलित होकर सभा द्वारा चलाये जा रहे बेटी बचाओ अभियान एवं धार्मिक अन्धविश्वास पर अपने ओजस्वी विचार व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि अब समय आ गया है जब लोगों को बेटियों के सम्बन्ध में अपनी मानसिकता बदलनी होगी। बेटा और बेटी के बीच भेदभाव करना और बेटियों को माँ के पेट में ही मरवाना एक अमानवीय कृत्य है और कानूनन अपराध भी है। आज बेटियाँ किसी भी क्षेत्र में बेटों से पीछे नहीं हैं और कहीं-कहीं तो वे लड़कों से बहुत आगे भी हैं। अतः यह मानसिकता समाप्त होनी चाहिए कि बेटी नहीं बेटा ही चाहिए। स्वामी जी ने महिलाओं पर हो रहे अमानवीय अत्याचारों की चर्चा करते हुए कहा कि कन्या भ्रूण हत्या, बलात्कार, आये दिन छेड़खानी की घटनायें तथा उत्पीड़न से नारी जाति त्रस्त है हमें इस स्थिति को बदलना होगा तथा कन्या भ्रूण हत्या, दहेज प्रथा, नारी उत्पीड़न तथा अश्लीलता के विरुद्ध वैचारिक क्रांति पैदा करनी होगी तथा महिलाओं के सम्मान तथा सुरक्षा के लिए वातावरण तैयार करना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए।

स्वामी जी ने धर्म के नाम पर फैलाये जा रहे पाखण्ड की चर्चा करते हुए कहा कि आज देश में पाखण्ड, धार्मिक, अन्धविश्वास और गुरुडम को सुनियोजित ढंग से फैलाया जा रहा है तथा धर्म के नाम पर पाखण्ड को बढ़ावा दिया जा रहा है। अन्धविश्वास और धर्म भीरूता का दोहन हो रहा है। एक वर्ष के अन्दर कई पाखण्डियों का पर्दाफाश होते आप सबने देखा है अतः ऐसे पाखण्डियों के खिलाफ योजनाबद्ध ढंग से कार्य करने की आवश्यकता है। अपने विद्वान्, आचार्य, संन्यासियों तथा ब्रह्मचारियों को विधिवत प्रशिक्षण देकर इन सब बुराईयों के खिलाफ मैदान में उतारने की हमारी योजना है। मैं आप सबसे तथा अन्य समाजों के पदाधिकारियों से अपील करता हूँ कि इस मुद्दे को सम्पूर्ण देश में उठायें तथा लोगों को वेद के सिद्धान्तों से परिचित करायें।

वार्षिकोत्सव के अवसर पर 4 जनवरी को सभा के कोषाध्यक्ष पं. माया प्रकाश त्यागी जी ने वेद मंत्र की व्याख्या करते हुए सदाचार जीवन में अपनाने पर बल दिया उन्होंने कहा कि हम अच्छा सोचें और अच्छे रास्ते पर चलने का प्रयास करें। किसी से भी ईर्ष्या, द्वेष वैमनस्य न करें और सबके साथ प्रेम का व्यवहार करें ऐसा करने से हमें आत्मिक शांति प्राप्त होगी तथा हमारा हृदय सदैव प्रसन्नता से भरा रहेगा। राग-द्वेष दूर होंगे और जीवन शुद्ध पवित्र और निर्मल बन जायेगा। उन्होंने श्रोताओं से प्रतिदिन सन्ध्या करने का भी आह्वान किया। उन्होंने कहा कि जिस परमात्मा ने हमें इतना अच्छा जीवन प्रदान किया है और हमारे पालन-पोषण के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियाँ जुटाई है उसके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का संध्या से अधिक अच्छा और कोई साधन नहीं हो सकता। सैकड़ों व्यक्तियों की उपस्थिति में उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ।

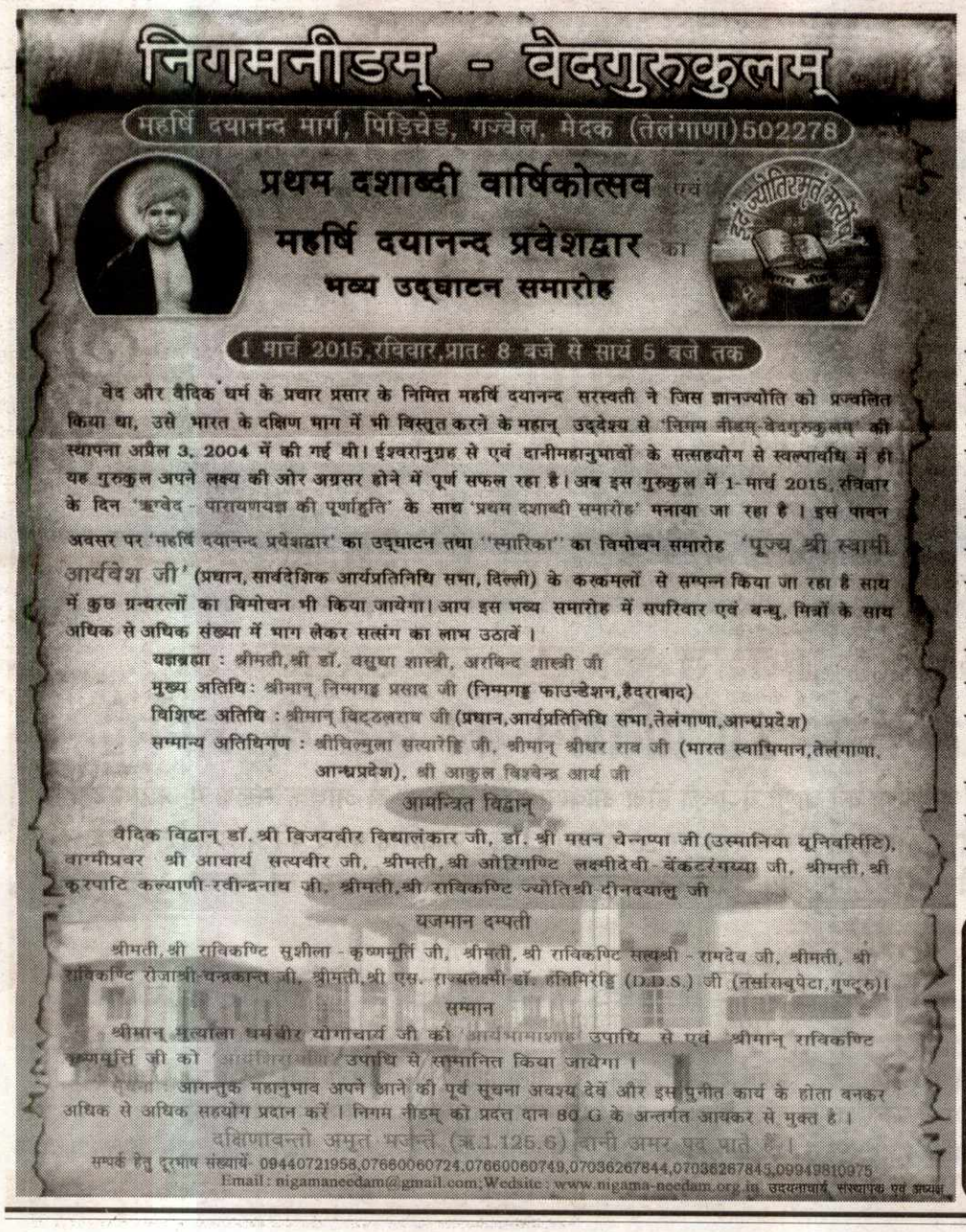

साधु आश्रम, अलीगढ़ में मकर संक्रांति यज्ञ सम्पन्न

दिनांक 14 जनवरी, 2015 को श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय, साधू आश्रम, अलीगढ़ की विशाल यज्ञशाला में मकर संक्रांति यज्ञ का आयोजन किया गया।

यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी सोम्यानन्द सरस्वती जी रहे और वेद मंत्रों का पाठ महाविद्यालय के विद्यार्थियों ने किया।

यज्ञोपरान्त स्वामी जी ने अपने प्रवचन में कहा कि मकर संक्रांति सौर्य वर्ष का प्रथम दिन होता है जिस प्रकार चन्द्रवर्ष में चैत्र शुदी प्रतिपदा प्रथम दिवस होती है तथा वर्तमान में होली का दिन वर्ष का अन्तिम दिन होता है और चैत्र मास के कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा प्रथम दिन होती है और उसी दिन हर्षोल्लास के साथ परस्पर मिलते हैं। मकर संक्रांति पर्व पूरे भारत देश में मनाया जाजा है क्योंकि इस दिन से सूर्य पृथ्वी के दक्षिण गोलार्द्ध से उत्तरी गोलार्द्ध की ओर चलना आरम्भ करता है जिससे भारतवर्ष में वायुमण्डल का तापमान बढ़ना शुरू हो जाता है जो शीत के प्रभाव को कम करता है ताप बढ़ने से इस मौसम में वर्षा भी हो जाती है और वायु में उपस्थित जलकण कोहरे के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। जो कृषि के लिए लाभदायक होता है इसी कारण यह अत्यन्त खुशी से मनाया जाता है। स्वामी जी ने विद्यार्थियों को संदेश दिया कि उन्हें भी अपना जीवन सूर्य और चन्द्रमा की तरह नियमित और परोपकारी बनाने का प्रयास निरन्तर करते रहना चाहिए। जीवन को उन्नत बनाना ही शिक्षा का मूल उद्देश्य है। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्राचार्य श्री जीवन सिंह जी ने भी प्रेरणादायक उपदेश दिये। यज्ञ में विद्यालय के छात्र व शिक्षक दल के साथ-साथ निकटवर्ती जनता ने भी भाग लिया।

यज्ञ का सम्पूर्ण व्यय विद्यालय के पूर्व छात्र नैष्टिक ब्रह्मचारी स्वामी गिरिराज जी, खेड़ा मंदिर लाड़वा (कुरुक्षेत्र) हरियाणा ने वहन किया साथ ही सामूहिक भोजन का प्रबन्ध भी उन्हीं के दान से हुआ। भजनोपदेशक श्री ओम प्रकाश (फ्रंटियर) और श्री कप्तान सिंह ने अपने सुमधुर भजनों से पर्व की शोभा बढ़ाई।

- श्री जीवन सिंह, प्राचार्य

प्रवेश सूचना
आर्य कन्या गुरुकुल शास्त्री नगर लुधियाना पंजाब
दूरभाष :-0161-2459563

छठी कक्षा (आयु +9 से -11 वर्ष) से कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली एवं पंजीकरण पत्र (मूल्य केवल 100/- रुपये) भरकर 31 मार्य, 2015 तक गुरुकुल के कार्यालय में जमा करवाएं। (पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं।) कन्याओं को लिखित प्रवेश परीक्षा 5 अप्रैल, 2015 दिन (रविवार) को प्रातः 8.00 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

- सत्यानन्द जी मुंजाल, कुलपति

POSTED AT N.D.P.S.O., N.D.-01 On 23–24 जनवरी, 2015
प्रकाशन की तिथि : 22 जनवरी, 2015
वैदिक सार्वदेशिक
22 से 28 जनवरी, 2015
पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/15-17
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2015-17]

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

धन का सदुपयोग

पृणीयादिन्नाधमानाय तव्यान् द्रीघीयांसमनु पश्येत पन्थाम्।
ओ हि वर्तन्ते रथ्येव चक्रान्यमन्यमुप तिष्ठन्त रायः।।

—ऋ० १०/११७/५

ऋषिः–आङ्गिरसो भिक्षुः।। देवता–धनान्नदानप्रशंसा।। छन्दः–विराट्त्रिष्टुप्।।

विनय–धन को जाते हुए कितनी देर लगती है? व्यापार में घाटा हो जाता है, चोर–लुटेरे धन लूट ले जाते हैं, बैंक टूट जाते हैं, घर जल जाता है आदि सैकड़ों प्रकार से लक्ष्मी मनुष्य को क्षणभर में छोड़कर चली जाती है। वास्तव में लक्ष्मीदेवी बड़ी चंचल है। वह मनुष्य कितना मूर्ख है जो यह समझता है कि बस, यदि में दूसरों को धन दान नहीं करूंगा तो और किसी प्रकार मेरा धन मुझसे पृथक् नहीं हो सकेगा। अरे, धन तो जब समय आएगा तो एक पलभर में तुझे कंगाल बनाकर कहीं चला जाएगा। इसलिए हे धनी पुरुष! यदि इस समय तेरे शुभकर्मों के भोग से तेरे पास धन–सम्पत्ति आई हुई है तो तू इसे यथोचित–दान में देने में कभी संकोच मत कर। जीवन–मार्ग को तनिक विस्तृत दृष्टि से देख और सत्पात्र को दान देने में अपना कल्याण समझ, अपनी कमाई समझ। सच्चा दान करना, सचमुच जगत्पति भगवान् को उधार देना है जो बड़े भारी दिव्य सूद के साथ फिर वापस मिलता है। जो जितना त्याग करता है वह उससे न जाने कितना गुणा अधिक प्रतिफल पाता है; यह ईश्वरीय नियम है। दान तो संसार का महान् सिद्धान्त है, पर इस इतनी साफ बात को यदि लोग नहीं समझते हैं तो इसका कारण यह है कि वे मार्ग को दूर तक नहीं देखते। जीवन–मार्ग कितना लम्बा है, यह संसार कितना विस्तृत है और इस संसार में जीवों को उनके कब के शुभ–अशुभ कर्मों का फल उन्हें कब मिलता है, यह सब–कुछ नहीं दिखाई देता। इसीलिए हमें संसार में चलते हुए वे अटल नियम भी दिखाई नहीं देते जिनके अनुसार सब मनुष्यों को उनके शुभ–अशुभ कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। यदि इस संसार की गति को हम तनिक भी ध्यान से देखें तो पता लगेगा कि धन–सम्पत्ति इतनी अस्थिर है कि यह रथचक्र की भाँति घूमती फिरती है– आज इसके पास है तो कल दूसरे के पास है, परन्तु हम अति क्षुद्र दृष्टिवाले हैं और इसलिए इस 'आज' में ही इतने ग्रस्त हैं कि हम 'कल' को देखते हुए भी नहीं देखते हैं। संसार में लोगों को नित्य धननाश होता हुआ देखते हुए भी अपने धननाश के एक पल पहले तक भी हम इस घटना के लिए कभी तैयार नहीं होते और इसीलिए तनिक–सा धननाश होने पर इतने रोते–चीखते भी हैं। यदि हम मार्ग को विस्तृत दृष्टि से देखें तो इन धनागमों और धननाशों को अत्यन्त तुच्छ बात समझें। यदि संसार में प्रतिक्षण चलायमान, घूमते हुए, इस धन–चक्र को देखें, इस बहते हुए धनप्रवाह को देखें, तो हमें धन जमा करने का तनिक भी मोह न रहे।

शब्दार्थ–**तव्यान्**=धन से बढ़े हुए समृद्ध पुरुष को चाहिए कि वह **नाधमानाय**=माँगने वाले सत्पात्र को **पृणीयात् इत्**=दान देवे ही; **पन्थाम्**=सुकृत मार्ग को **द्राघीयांसम्**=दीर्घतम **अनुपश्येत**=देखे। इस लम्बे मार्ग में **रायः**=धन सम्पत्तियाँ उ **हि**=निश्चय से **रथ्याः चक्राः इव**=रथ–चक्रों की भाँति **आ वर्तन्ते**=ऊपर–नीचे घूमती रहती हैं बदलती रहती हैं और **अन्यं अन्यं उपतिष्ठन्ते**=एक को छोड़कर दूसरे के पास जाती रहती है।

साभार-'वैदिक विनय' से
आचार्य अभयदेव विद्यालंकार

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई–मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

लागत मूल्य 3100/– रुपये

भारी छूट पर उपलब्ध

एक लाख रुपये अग्रिम देने वाले महानुभावों का चित्र तथा संक्षिप्त परिचय वेद सैट में प्रकाशित किया जायेगा तथा दस वेद सैट उन्हें निःशुल्क प्रदान किए जायेंगे।

3100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। **डाक व्यय 225/– रुपये अलग से देना होगा।** प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी। अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।

thearyasamaj.org